उक्षर

नालको की हिंदी गृह-पत्रिका

जनवरी-2020

नालको NALCO

नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड

(खान मंत्रालय, भारत सरकार का एक नवरत्न लोक उद्यम)

निगम एवं पंजीकृत कार्यालय

पी/1, नयापल्ली, भुवनेश्वर-751013

निगम कार्यालय में विश्व हिंदी दिवस सप्ताह समारोह के अवसर पर आयोजित चित्रकला व काव्य आवृत्ति प्रतियोगिता के प्रतिभागी

मंत्री महोदय श्री प्रल्हाद जोशी जी का निगम कार्यालय, भुवनेश्वर आगमन

निगम कार्यालय में ई 7-8 ग्रेड के लिए आयोजित हिंदी कार्यशाला

अक्षर

नालको की हिंदी गृह-पत्रिका
जनवरी-2020

मुख्य संरक्षक:
श्री श्रीधर पात्र, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक

संरक्षक:
श्री व्ही. बालसुब्रमण्यम, निदेशक (उत्पादन)
श्री संजीव कुमार रॉय, निदेशक (परियोजना एवं तकनीकी)
श्री प्रदीप कुमार मिश्र, निदेशक (वाणिज्य)
श्री राधाश्याम महापात्र, निदेशक (मानव संसाधन)
श्री सोमनाथ हंसदा, मुख्य सतर्कता अधिकारी

सलाहकार:
श्री अमीय कुमार पट्टनायक, कार्यपालक निदेशक (मा.सं. व प्र.)
श्री जावेद रेयाज़, महाप्रबंधक (औ.अ. एवं अनुपालन)

संपादक:
श्री रोशन पाण्डेय, सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

सह-संपादक:
श्री हिमांशु राय, कनिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), निगम कार्यालय, भुवनेश्वर
डॉ. धीरज कुमार मिश्र, कनिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), दामनजोड़ी
श्री पवन कुमार त्रिपाठी, कनिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), अनुगुळ

प्रकाशक:

नालको NALCO

नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड
(खान मंत्रालय, भारत सरकार का एक नवरत्न लोक उद्यम)
निगम एवं पंजीकृत कार्यालय
पी/1, नयापल्ली,भुवनेश्वर-751013
वेबसाईट : http://www.nalcoindia.com
ईमेल: javed.reyaz@nalcoindia.co.in

सीमित वितरण हेतु

(पत्रिका में छपने वाले विचार लेखक/कवि के निजी हैं, इनसे संस्था या संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं)

विषय-सूची

औद्योगिक सुरक्षा	राजीव तलवार	6
उद्योग 4.0-भारत के लिए त्वरित प्रगति के अवसर	मनीष कुमार	7
माँ	गौतम कुमार सिंह	9
मानव संसाधन प्रबंधन और उपादेयता	डॉ धीरज कुमार मिश्र	10
फ़्रेड रिकवेस्ट	सदाशिव सामन्तराय 'सुमन'	12
जीवन संगम	अभिषेक कुमार मौर्य	13
ज़िंदगी की मर्यादा	विनय ठाकुर	14
बारिश	मिलिंद नीलकंठ वानखेड़े	14
भ्रम	शगुफ़्ता जबीं	15
ललकार	चिरन्तन श्याम	16
अति परिचय ते होत है.....	रोशन पाण्डेय	17
हिंदीःव्यवसाय सहायक के रूप में	अखिल कुमार	19
मानवता क्यों मर रही है	भानूप्रिया राउत	20
उत्कृष्ट बनने की उत्कंठा रखें	डॉ रमन दुबे	21
महिला सशक्तिकरण	किरण तलवार	22
समय प्रबंधन	धरित्री शतपथी	23
मुसीबतों के आगे जिंदगी और भी है	प्रिया चिंनारॉय	24
गांधीगिरी	भगवतुला रमेश	25
स्वस्थ शरीर-सुखी परिवार	रोशनी कुमारी	26
वृक्षारोपण	कुंवर सिंह कोड़ाह	27
जल है तो कल है	अँशिता सिन्हा	28
पाकिस्तान ख़बरदार	अंशुमान सिन्हा	29
काले नाग की निष्पत्ति	सुजाता पाणि	30
मेरी पहली उड़ान	सर्जना सिंह	30
पीपीएफ (सार्वजनिक भविष्य निधि) खाता	प्रशांत कुमार महारणा	31
फूटा हुआ घड़ा	निरूपमा शर्मा	33
बेटियाँ	श्वेता रानी	33
कलयुग का महामानव	कामना सिंह	34
शिक्षा व संस्कार	रजनीश कुमार गुप्ता	35
आओ तुम्हें हिंदी से मिलवाएँ	शुभाशीष पंडा	36
हिंदी की कथा	अनुज कुमार	36
जीवन एक अमूल्य रत्न	सौरभ जेना	37
क्वालिटी सर्कल की अवधारणा	सुरजीत कर	38
मेरे कविताओं के हमसफ़र	शुभम मिश्र	38
आज का कश्मीर	बि. सुजया लक्ष्मी	39
क्रिस्पी चिली बेबी कॉर्न	संध्या गुप्ता	40

प्रल्हाद जोशी
PRALHAD JOSHI
ಪ್ರಲ್ಹಾದ ಜೋಶಿ

सत्यमेव जयते

संसदीय कार्य, कोयला तथा खान मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली
MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS,
COAL AND MINES
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI

संदेश

मझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हो रही है कि नेशनल एल्यूमीनियम कंपनी लिमिटेड (नालको), भुवनेश्वर अपनी हिंदी गृह ई-पत्रिका "**अक्षर**" का प्रकाशन कर रहा है जिसमें कंपनी के कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों द्वारा रचित तकनीकी आलेख सहित रोचक रचनाओं का संकलन है। यह पत्रिका कार्यालयों में हिंदी के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभा रही है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका नालको के अधिकारियों एवं कार्मिकों को अपने रचनात्मक कौशल को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम बनेगी । मैं नालको की गृह ई-पत्रिका "अक्षर" के इस अंक के रचनाकारों, संपादक मंडल, संरक्षकों एवं पाठकों को बधाई देता हूँ तथा कामना करता हूँ कि यह अंक भी पूर्व अंकों की भाँति ज्ञानवर्धक, रूचिपूर्ण एवं प्रेरणादायी साबित होगा।

गृह-पत्रिका "अक्षर" के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

(प्रल्हाद जोशी)

Office : Room No. 15, Parliament House, New Delhi-110001, Tel : 011-23017780, 23017798, 23018729, Fax : 011-23792341
Office : Room No. 504, C Wing, 5th Floor, Shastri Bhawan, Tel : 23070522, 23070524, Fax :23070529
Residence : 5, G.R.G. Road, New Delhi-110001, Tel : 011-23094650, 23093497
H. No. 122-D, 'Kamitartha' Mayuri Estate, Keshwapur, Hubli-580023 (Karnataka)
Tel. No. : 0836-2251055, 2258955 E-mail : pralhadvjoshi@gmail.com

अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक की कलम से...

श्रीधर पात्र
अध्यक्ष-सह-प्रबंध-निदेशक

संदेश

प्रिय पाठकों,

मुझे विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर आप सबको 'अक्षर' पत्रिका का यह अंक सौंपते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। आप सभी भली-भांति परिचित हैं कि हिन्दी कहीं सरकारी राजकाज के रूप में, कहीं सम्पर्क सूत्र के रूप में बांधने में, कहीं फिल्म, नाटक या गीत के रूप में नित नई उमंग का संचार करती हुई, कहीं सामाजिक सामंजस्य के त्यौहार के रूप में तो कहीं भक्ति भाव में विभोर संपूर्ण विश्व में व्याप्त है। हिंदी के इस विस्तार के बारे में हम भारतीय परिचित कितने हैं यह कहना कठिन है किंतु यह कहा जा सकता है कि हिंदी के विस्तार के बारे में अनभिज्ञता बनी हुई है, जो हिंदी के साथ-साथ राजभाषा के लिए हितकर नहीं कहा जा सकता है। वर्तमान युग में भाषा के वर्चस्वता की प्रतियोगितापूर्ण दौड़ में यदि विश्व हिंदी दिवस का आयोजन न किया जाए तो हम अपनी भाषिक शक्ति का न तो प्रदर्शन कर पाएंगे और न ही विश्व में फैले हिंदी प्रेमियों को एक मंच ही प्रदान कर पाएंगे; इसलिए विश्व हिंदी दिवस का आयोजन केवल एक आवश्यकता ही नहीं, बल्कि समय की मांग है। समय की इस मांग से कदम से कदम मिलाते हुए नालको परिवार की ओर से हमारी गृह-पत्रिका 'अक्षर' का यह अंक हिंदी के विश्व भाषा बनने की मार्ग का आधार बनने का प्रयास है।

इन दिनों हमारे समाज में नववर्ष का उल्लास है। हम सभी ने नववर्ष के उपलक्ष्य में कुछ न कुछ प्रण लिया तथा अपने जीवन को और अधिक सार्थक व स्वस्थ बनाने के लिए अपने आप से वादा किया। मैं 'अक्षर' पत्रिका के इस अंक के माध्यम से आप सब से अपील करता हूँ कि आप अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन करने का वादा भी इस नववर्ष पर अपने आप से करें। वर्तमान समय की मांग है कि हम अपने लक्ष्य निर्धारित करें, भविष्य की सोचें तथा आगे बढ़े।

फिलहाल, एल्युमिना उद्योग मंदी के दौर से गुजर रहा है। मुझे पूरा भरोसा है कि मेरे साथी अपने सामूहिक प्रयास से कंपनी को आगे ले जायेंगे। सभी कठिनाईयाँ तभी तक कठिनाई रहती हैं, जबतक कि हम उसका सामना नहीं करते। हमने पिछले वर्षों में बेहतरीन प्रदर्शन किया है और पुन: नई ऊचाईंयों को छुएंगें।

अंत में, आप सभी को फिर से विश्व हिंदी दिवस तथा नववर्ष की बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

(श्रीधर पात्र)

संपादकीय

प्रगति प्रोत्साहन का प्रतिबिंब है। प्रोत्साहन का महत्व इस बात में है कि, प्रयास कितने मनोयोग से किया गया है और उसकी परिधि कितनी व्यापक और विस्तृत है। इस परिधि के विस्तार से ही प्रगति का विस्तार होता है, लोग, विचार, प्रयास जुड़ते हैं और कारवां बनता चला जाता है।

अनायास ही दार्शनिक भाव से अक्षर का प्रस्तुत अंक आप सभी की अनुशंसा व सुझाव के साथ संभावित सुधार के लिए प्रस्तुत है। इस अंक के साथ अपने कलेवर में 'न-क्षर' होने वाला यह 'अक्षर' साहित्य एवं जीवन की विभिन्न पहलुओं के साथ रंगीनीयत से सराबोर है।

इस रंगीनीयत में हर उन व्यक्तियों का प्रयास शामिल रहा जो अक्षर से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में किभी भी प्रकार से जुड़े-उनका आभार। बिहारी के लिए प्रयुक्त विशेषण "गागर में सागर" को कल्पित कर प्रस्तुत अंक का संकलन, इसकी संरचना, संवर्धना एवं संपादन का प्रयास किया गया है, ताकि आप प्रबुद्ध पाठकों की रुचि को पोषित व परिवर्धित किया जा सके।

अक्षर के साथ यह सत्य भी संपादित हुआ है कि, नालकोनियन व्यवसाय के साथ हर उस पहलू में माहिर हैं जिसके नमूने आपके सम्मुख प्रस्तुत किये जा सके हैं। व्यक्ति की काबिलीयत उसके प्रयास पर निर्भर करती है, जन्म से जैसे किसी में मानवता नहीं होती वैसे ही जन्म से कोई श्रेष्ठ भी नहीं होता; श्रेष्ठता और मानवता की साधना की जाती है, इन्हें सच्चे प्रयास से विकसित किया जाता है। आज वर्तमान के साथ बीते कल के आईने में भविष्य की झलक को यदि आदर्श के साथ पाना है, तो जरूरी है कि, हम इस साधना के साधक बनें। यही साधना हमें जीवन में श्रेष्ठता का आस्वादन कराती है।

जायके हमारा स्वाद प्रस्तुत करने के साथ ही हमारी पसंद भी प्रस्तुत करते हैं। इस अंक के साथ आपके मानस को पोषित करने वाले रचनाकार की लेखनी अपने सचेष्ट कृत्य में कितनी सफल हुई, इसे मालूम करने के लिए हम आपके अनुशंसा के लिए प्रतीक्षारत रहेंगे।

सोद्देश्य कार्य सदैव सराहनीय होते हैं। इस पत्रिका के वर्तमान अंक को प्रस्तुत करते हुए हमारा उद्देश्य भी संस्था के कर्मचारियों की साहित्यिक रुचि को बरकरार रखना तो है ही, इससे बड़ा उद्देश्य यह है कि, जिनमें लिखने की कला व क्षमता है, उनके इस कौशल को विकसित किया जाए और भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं प्रोत्साहन को प्रोत्साहित करने की पहल भी की जाए; वह भी सामूहिक भावना से। प्रकाशन कर्म में कई ऐसे प्रेरकों से भी रूबरू हुए, जिन्होंने इस पत्रिका के समय से प्रकाशन को गहरे तक उत्साहित किया। उनके प्रति भी आभार व्यक्त होना लाज़मी है।

धन्यवाद !

हर उन व्यक्ति विशेष का जो साथ रहे, जो साथ नहीं रह सके!

संपादक

मेरा नालको मेरा देवालय

जाति धर्म-वर्ण से परे
एकता मैत्री सदभावना से भरे
एल्यूमिनियम देव का ये आलय
मेरा नालको मेरा देवालय
सच कहूँ अपनी तो यही गंगा, यही हिमालय।
नव रत्न के ताज से सुसज्जित
आधुनिक तकनीकी और इंजीनियरिंग से व्यवस्थित
उत्तम गुणवत्ता के लिए सदा ही समर्पित
सच कहूँ अपनी तो यही गंगा यही हिमालय।
सामाजिक उत्तरदायित्व निर्वहन में सबसे आगे
पर्यावरण सुरक्षा से कभी न भागे
प्रदूषित न हो जल, जमीन और हवा
मिलती रहे ग्राहकों को सर्वोत्तम सेवा
कर्मचारियों को मिले सुरक्षित कार्य परिसर
देश और संयंत्र का भी विकास हो निरंतर
इन्हीं विचारों के लिए सारा जग सुपरिचित
विश्वकर्मा का ये आलय
मेरा नालको मेरा देवालय

वसंत सोरेन्ग
वरिष्ठ तकनीशियन, प्रद्रावक,अनुगुळ

औद्योगिक सुरक्षा

आज का युग विज्ञान और तकनीकी का युग है। विज्ञान की प्रगति के साथ नवीनतम तकनीकी का प्रयोग हो रहा है। मशीनों के द्वारा सभी कार्य संभव किए जा रहे हैं। अतः एक बड़ी संख्या में लोगों को औद्योगिक संस्थानों में कार्य करने का अवसर मिल रहा है। परन्तु इसके साथ ही मानव का मशीनों के साथ कार्य करने से दुर्घटना होने का जोखिम बढ़ जाता है। अंतः औद्योगिक संस्थानों में सुरक्षा का महत्व बढ़ जाता है और कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को काम के साथ-साथ सुरक्षा का भी गंभीरता से ध्यान रखना चाहिए। एक व्यक्ति के पीछे उसका परिवार उस पर निर्भर रहता है, अतः संस्थानों में कर्मचारियों में सुरक्षा का भाव बढ़ाने से एक सुरक्षा का वातावरण उत्पन्न हो जाता है। इसमें कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने के साथ-साथ उनको सुरक्षा के उपकरण भी उपलब्ध कराए जाते हैं। इससे मशीनों से सुरक्षा तो मिलती ही है और साथ-साथ व्यक्ति की निजी सुरक्षा को भी बढ़ावा मिलता है।

औद्योगिक सुरक्षा की आवश्यकताः आज सुरक्षा से कार्य करने की आवश्यकता है क्योंकि यदि किसी कर्मचारी की दुर्घटना में असमय ही मृत्यु हो जाती है तो संस्थान का नाम तो खराब होता ही है और परिवार भी दुःख भोगता है। दक्ष कर्मचारी खो देने से संस्थान का कार्य भी प्रभावित होता है। अतः हर घड़ी, हर पल, हर समय सुरक्षा की आवश्यकता है और इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए। सुरक्षा पालन हेतु कई नए कानून भी बनाए गए हैं परन्तु कानून बनाने मात्र से इस समस्या का समाधान संभव नहीं है। इसके लिए कर्मचारियों को प्रशिक्षण देना अनिवार्य होना चाहिए और सुरक्षा नीति के प्रति जागरूकता उत्पन्न करनी चाहिए। सुरक्षा के नियम, मानक और सिद्धातों का यदि सही प्रकार से पालन किया जाए तो दुर्घटना की संभावना को पूरी तरह से नकारा जा सकता है। औद्योगिक सुरक्षा की महत्ता इसीलिए है कि, यदि कोई एक भी दुर्घटना हो जाती है तो कार्यक्षेत्र में अन्य कर्मचारियों का मनोबल भी गिर जाता है और वातावरण भी खराब हो जाता है, अतः सुरक्षा पालन अनिवार्य है।

औद्योगिक सुरक्षा समस्या का निदानः सुरक्षा एक नैतिक और वैधानिक जिम्मेदारी है। उसके लिए समुचित प्रशिक्षण की जरूरत है। प्रशिक्षण से ही दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है और कर्मचारियों के चिंतन तथा दैनिक कार्यकलापों में परिवर्तन लाया जा सकता है। सुरक्षित परिवेश, कार्यक्षेत्र और कार्यविधि से ही सुरक्षा समस्या का निदान संभव है। कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि, "दुर्घटना होती नहीं, परन्तु हो जाती है" अर्थात मानवीय भूल चूक इसका कारण बन जाते हैं। इसके लिए नए तकनीकी प्रावधानों को सोचना चाहिए जिससे कार्यक्षेत्र सुरक्षित हो। सुरक्षा उपायों के लिए कई कानून संशोधन भी हुए और नई धाराएं भी जोड़ी गई जिससे कार्य प्रणाली में बदलाव आया। आज अनिवार्य है कि सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली की जिसके लिए समुचित चर्चा एवं विचार की आवश्यकता है। सुरक्षा हेतु समुचित आर्थिक प्रावधान की भी व्यवस्था होनी चाहिए। प्रत्येक औद्योगिक संस्थान का समय-समय पर सुरक्षा की दृष्टि से निरीक्षण अनिवार्य होना चाहिए ताकि सुरक्षा पालन से उत्पादकता बढ़े तथा लाभ अर्जन में सहायक हो।

उपसंहारः सुरक्षा उपायों को अपना कर दुर्घटनाओं में कमी लाई जा सकती है और प्रत्येक कार्य समुचित ढंग से समापन भी किया जा सकता है। सुरक्षा उपायों से ही कई दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है और कई अनमोल जीवन बचाए जा सकते हैं। सुरक्षा मानकों और माप दंडों का सम्मान करना चाहिए । सुरक्षा ही संपूर्ण जीवन का आधार है, सार है और इसके बिना जीवन बेकार है। सुरक्षा जीवन में नई शक्ति उत्पन्न करती है, अतः सुरक्षा के सभी कार्यों में हमें गंभीरता से विचार करना होगा और एक नए सुरक्षित समाज का निर्माण करना होगा। सुरक्षा के संदेशों का विस्तार करना होगा और इन्हें लोकप्रिय करने हेतु समुचित प्रचार प्रसार करना होगा। सुरक्षा के बुनियादी कार्यों की जानकारी और नवीनतम विकास का ज्ञान ही सुरक्षा व्यवस्था को सुनिश्चित करने में सहायक सिद्ध होती है।

राजीव तलवार
सहायक महाप्रबंधक, ग्रहीत विद्युत सयंत्र, अनुगुळ

उद्योग 4.0-भारत के लिए त्वरित प्रगति के अवसर

भूमिकाः

मूल रूप से उद्योग 4.0 का संबंध औद्योगिक क्रांति से है। इसकी शुरूआत सर्वप्रथम जर्मनी से हुई थी। जर्मनी में इसकी चर्चा सार्वजनिक रूप से तब होने लगी जब सन् 2011 में इसे "हैन्नोवर फेअर" में प्रस्तुत किया गया। सन् 2013 में जर्मनी के "संघीय शिक्षा एवं अनुसंधान मंत्रालय" ने जब उद्योग 4.0 के कार्यान्वयन की सिफारिश दी तब पूरा जर्मनी इस बात से अनभिज्ञ था कि चर्चा मात्र का यह विषय पूरे विश्व जगत को अपनी ओर आकर्षित करेगा।

उद्योग 4.0 के इतिहास पर दृष्टि डालो तो ये चार चरणों से गुजरता है-

(1) मशीनीकरण : उद्योग 1.0

(2) बड़े पैमाने पर उत्पादन : उद्योग 2.0

(3) स्वचालन : उद्योग 3.0

(4) चीजों और सेवाओं का इंटरनेट : उद्योग 4.0

यहाँ उद्योग 4.0 का तात्पर्य सिर्फ कल कारखानों, नूतन उत्पाद, नूतन तरीकों आदि के प्रयोग मात्र से नहीं बल्कि विनिर्माण में कृत्रिम बौद्धिक, चीजों का इंटरनेट (Internet of things IOT), यंत्रमानव (Robot), सूचना तंत्र के व्यापक उपयोग से है। विनिर्माण में आंकड़ों का विनिमय, स्वतः संचालित तकनीकी, आधारभूत संरचना का रूपांतरण, सही समय पर सही आंकड़ों का आदान-प्रदान तथा सुदृढ़ एवं विश्वसनीय सूचना तंत्र का प्रयोग, उदाहरण के तौर पर हमारी प्रतिष्ठित कंपनी नालको में प्रयोग होने वाले सूचना तंत्र में से एक SAP सॉफ्टवेयर भी है जो कि विश्वसनीय है। यह डिजीटल दुनिया को भौतिक दुनिया के साथ जोड़ता है। इसमें किसी भी कंपनी के लिए असाधारण अवसर विकास तथा प्रतिस्पर्धात्मक लाभ का सृजन करने की क्षमता होती है। विशेषज्ञों के अनुमान से व्यवसाय की उत्पादकता में 30% तक की वृद्धि की जा सकती है।इसमें अभिकलन यंत्र (Computer) और स्वचालन पूरी तरह से एक साथ एक नए तरीके से आता है और यंत्रमानवीय गुण जिसमें मशीनी भाषा को समझने की क्षमता होती है, जो अभिकलन यंत्र से जुड़ा होता है और बिल्कुल कम इनपुट से चालित होता है इसलिए इस युग (उद्योग 4.0) में (Factory) कारखाना को "स्मार्ट फैक्ट्री" बोला जाता है।

परिभाषाः उद्योग 4.0 विनिर्माण प्रौद्योगिकियों में स्वचालन और डॉटा विनिमय की मौजूदा प्रवृत्ति का एक नाम है। इसमें साईबर भौतिक प्रणाली, चीजों का इंटरनेट, क्लाउड कंप्यूटिंग और संज्ञानात्मक कंप्यूटिंग शामिल है। इस प्रकार वह युग जहाँ मशीन का प्रयोग उस स्तर पर हो जिसमें मानव हस्तक्षेप कम से कम हो और गुणवत्ता एवं विकास अत्यधिक हो।

भारत में इसके अवसरः फोर्ब्स के अनुसार, " उद्योग 4.0 से सबसे अधिक भारत लाभान्वित होगा" भारत तेजी से बढ़ता विकासशील देश है जहाँ स्वयं भारत ही नहीं अपितु पूरा विश्व इसे अवसर के रूप में देखता है। अगर आंकड़ों पर नजर डालें तो विश्व के सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product-GDP) 23.68 अरब डॉलर में उद्योग का हिस्सा 30.50% जिसमें चीन और अमेरिका क्रमशः पहले और दूसरे स्थान पर है। वहीं भारत बारहवें स्थान पर है. वहीं भारत में उद्योग का हिस्सा 29% है और सेवा क्षेत्र का 54% है। इससे यह बात तो साफ है कि भारत में औद्योगिक विकास की असीम संभावनाएं हैं। इसलिए हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने "Make in India" कार्यक्रम की शुरूआत की है।

यद्यपि सन् 1990 के दशक में उदारीकरण नीति (Liberatisation Policy) आयी जिससे हमारी विकास दर 4% से 9% तक पहुँच पायी, वहीं चीन 80 के दशक में ही यह नीति अपनायी थी और उनकी विकास की दर 11.5% तक चली गयी। भारत के अनुमानित विकास दर 7.6% से अधिक थी इसलिए भारत को "दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था" कहा जाता है जो कि सन् 2050 तक दूसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगी।

विश्व की तुलना में सस्ती श्रम शक्ति, परिवहन खर्च, व्यापार में आसानी के साथ विकास की ओर अग्रसर भारत पूरी दुनिया में अपनी छाप छोड़ रहा है। विश्व की दूसरी बड़ी आबादी वाला भारत देश को पूरा विश्व एक उपभोक्ता के रूप में देखता है। जिसमें उद्योग 4.0 की भूमिका सबसे अहम रहेगी। यद्यपि चीन जनसंख्या मामले में सबसे बड़ी आबादी वाला देश है परंतु युवा

शक्ति में भारत से पीछे है, इसलिए चीन के मुकाबले भारत में उद्योग 4.0 के असीम अवसर हैं। व्यापार कर सकने में आसानी (Easy of doing business) की श्रेणी में भारत की सराहनीय प्रगति हुई है, 30 अंक के उछाल के साथ 100वें स्थान रहा। यहाँ विश्व की सबसे बड़ी युवा श्रम शक्ति है, नियम एवं कानूनों में बहुत से बदलाव किए गए हैं ताकि व्यवसाय को बढ़ावा मिले। इसलिए उद्योग 4.0 के सबसे अधिक अवसर अगर किसी देश में है तो वह भारत ही है।

वर्तमान स्थिति एवं आंकड़ेः- सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत का स्थान सराहनीय है और इसी सूचना प्रौद्योगिक के बल पर आईटी पेशेवर की एक बड़ी संख्या उद्योग 4.0 के माध्यम से विनिर्माण की परिवर्तनकारी यात्रा पहले से शुरू कर दी है। स्मार्ट शहरों के निर्माण की परियोजना उद्योग 4.0 के अंतर्गत ही की जा रही है। किसी भी अग्रिम तकनीक के लिए डिजीटल संपर्क एक रीढ़ होता है। अतः भारत सरकार ने "डिजीटल इंडिया कार्यक्रम" की शुरूआत की है। एशिया उत्पादकता संगठन (Asian Productivity Organisation APO) ने उद्योग 4.0 के लिए राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद (National Productivity Council) नई दिल्ली को उत्कृष्टता केंद्र (Center of Excellence on IT) के लिए नामित किया है। इस परिदृष्य में उत्कृष्टता केंद्र सूचना संग्रह और उसके विकास, प्रसार तथा क्षमता निर्माण में परिणामस्वरूप "स्मार्ट फैक्ट्री" का निर्माण शुरू होगा जो उद्योग 4.0 की ओर एक पहल होगी। हमारी प्रतिष्ठित कंपनी नालको में चलित वर्तमान तकनीक Aluminium Pechiney's (Rio Tinto Alcon-RTA) में लाया गया सुधार उद्योग 4.0 की ओर बढ़ाया हुआ कदम है। सुधार किए गए तकनीक से ऊर्जा व समय की बचत, कार्बन बचत तथा अन्य सामग्री की खपत में बचत हो रही है। कई अन्य सहायक सॉफ्टवेयर की मदद से नियंत्रण भी रखा जाता है ताकि उत्पादन गुणवत्ता में वृद्धि की जा सके। सूचना तंत्र "SAP सॉफ्टवेयर में समय-समय पर नवीनीकरण किया जाता है। अवसर की दिशा में "मेक इन इंडिया (Make in India)" सबसे प्रभावी कार्यक्रम है जो कि उद्योग 4.0 की दिशा में बढ़ाया गया कदम है।

आवश्यक पहलूः

उद्योग 4.0 के अवसर को पूर्णतया भुनाने के लिए निम्नलिखित विशेषताएँ अति आवश्यक है-

- अंतर-संचालनियता
- सूचना पारदर्शिता
- तकनीकी सहायता
- विकेंद्रीकृत निर्णय लेने की क्षमता

इसके फायदे एवं चुनौतियाः

फायदे और चुनौतियां तो हमेशा साथ-साथ चलती हैं। फायदे बहुत सारे हैं तो चुनौतियां भी हैं, इनका सारांश इस प्रकार है,

1. प्राकृत संसाधनों और ऊर्जा का अधिक कुशल उपयोग
2. लागत में कमी (विशेषज्ञों के अनुमानुसार)
   उत्पादन लागत में 10% - 30% की कमी
   लॉजिस्टिक लागत में 10% - 30% की कमी
   गुणवत्ता प्रबंधन लागत में 10% - 20% की कमी
3. श्रम उत्पादकता एवं उत्पादन में वृद्धि
4. नए बाजार की उत्पत्ति
5. ग्राहक की जवाबदेही में सुधार
6. बिना या कम लागत बढ़ाए उत्पादन में वृद्धि
7. अधिक लचीली एवं दोस्ताना वृद्धि
8. निवेश एवं रोजगार के नए अवसर
9. दुर्घटना में कमी

कम कुशलता वाले रोजगार भी खतरे में होगे, हालांकि क्षमता में वृद्धि से उत्पन्न नए रोजगार से यह संतुलित भी होगा। अतः अपने आप को तैयार करने में निम्नलिखित चुनौतियों का सामना करना पड़ेगाः

1. अत्यधिक निवेश की आवश्यकता,
2. रोजगार में कटौती जो पहले से कार्यरत हैं,
3. जागरूकता एवं कुशल प्रशिक्षण की आवश्यकता
4. बुनियादी ढ़ांचों में विस्तार
5. डॉटा एवं आईटी सुरक्षा की समस्या
6. उत्पादन प्रक्रिया में अखंडता की स्थिरता

निष्कर्षः

जब भी बदलाव आता है तो अवसर के साथ डर और चुनौतियों भी लाता है। उद्योग 4.0 के अपनाने से जितने

फायदे हैं वह आने वाले युग की मांग एवं जरूरत है। जिस तरह से जनसंख्या वृद्धि हो रही है, प्राकृतिक संसाधन सीमित है, ऐसे में मांग की पूर्ति बिना संसाधनों को गवाएं और बर्बाद किए सर्वोत्कृष्ट उपयोग करना है तो उद्योग 4.0 को अपनाना होगा तब जब इसके असीम अवसर भारत में हैं। यह बात फॉर्ब्स ने भी मानी है।

एक समय ऐसा था जब अभिकलन यंत्र (Computer) आया तो इसे अपनाने में बहुत परेशानी हुई, रोजगार से भी बहुतों को हाथ धोना पड़ा। परंतु वर्तमान में इसकी उपयोगिता से जितना विकास हुआ है उसकी तुलना नहीं की जा सकती है, बल्कि वर्तमान स्थिति कंप्यूटर की देन है। हालांकि नकारात्मक सोच रखने वाले समुदायों से नुकसान भी हुआ है। परंतु हम इसको नियंत्रित भी कर रहे हैं। ठीक उसी प्रकार उद्योग 4.0 से भी हम एक नए बदलाव की ओर बढ़ेंगे जो हमारे उत्पादन करने के तौर-तरीकों, नियमों को नयी ऊर्जा, नयी तकनीक, कृत्रिम बौद्धिक क्षमता, यंत्रमानव आदि की मदद से बदल कर रख देगा।

कोई भी चीज अच्छी या बुरी नहीं होती है ये हमारे उपयोग के तरीकों और सोच पर निर्भर करती है। अगर हम सही दिशा में सही सोच-समझ तथा समाज और जनहित में करेंगे तो इसके हमेशा फायदे ही होंगे।

अतः भारत जो दुनिया की दूसरी बड़ी जनसंख्या है जिसके पास सबसे बड़ी युवा शक्ति है, उद्योग 4.0 के सबसे अधिक अवसर है।

मनीष कुमार
वित्त विभाग, निगम कार्यालय, भुवनेश्वर
(आंकड़े वर्ष 2017-18 पर आधारित)

माँ

उंगली पकड़ कर चलना सिखाती,
ऊँच नीच दिखाती, सही गलत बताती,
जब जब स्नेह का सदभाव आया,
माँ, तुमको खुद के सबसे करीब पाया,
तुम्हारा खुद को रखना सबसे पीछे,
देखा है माँ, मैंने सब, आँखें मीचे.
रोने पे दुलारना, पुचकारना, घुमाना,
टहलाना, कुछ बातें बनाना, प्यार से गुस्साना,
खिलाने के लिए वो सारे लालच दिलाना.
जो न दे पाई कुछ कभी अगर,
चुपचाप अकेले में जा आँसू बहाना.
क्या चाहिए और मुझे,
माँ, मैंने तुम्हारा प्यार है पाया, छिपाया चाहे कितना भी,
तुम्हारे लाल आँखों ने सब था बताया.
चाहे था मैं कितना भी परेशान,
कर बात तुमसे, आई नींद पूरी रात. चाहे होऊं मैं किसी शीर्ष पे,
मुझको हैं सारी बातें ये याद.
है क़र्ज़ इतना बड़ा तुम्हारा,
कभी ना पाऊँगा उतार. दैविक कोई रूप हो तुम,
अतुलनीय है तेरा प्यार.. माँ, अतुलनीय है तेरा प्यार

गौतम कुमार सिंह
कनिष्ठ प्रबंधक (कंपनी सचिव)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

मानव संसाधन प्रबंधन और उपादेयता

किसी भी राष्ट्र की सामाजिक सांस्कृतिक, राजनीतिक व्यवस्था के सुचारू रूप से संचालन अथवा कार्य निष्पादन में मानव संसाधन और प्रबंधन अनिवार्य तत्व हैं इसके पश्चात ही संबंधित कार्य का वर्गीकरण किया जाता है। भिन्न भिन्न कार्यों के लिए आवश्यकतानुसार विभाग स्थापित किए जाते हैं। उनके कर्तव्यों/ उत्तरदायित्व को परिभाषित किया जाता है। इस व्यवस्थित ढांचे के सृजन में व्यवस्था की निर्मिति की प्रक्रिया में शासन की पदचिन्हों/ नियमों/ निर्देशों के अनुपालन तथा संविधान में नागरिकों/ कार्मिकों के हित लाभ को प्रमुखता देते हुए संबंधित विद्वजनों और संस्थागत पदानुक्रम के अनुमोदन से लागू किया जाता है। राष्ट्र के संबंध में, यह व्यवस्था/ विभाग/ अनुशासन - शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार, विदेश, सूचना प्रौद्योगिकी, यातायात / परिवहन इत्यादि हैं। बहरहाल मानव संसाधन और प्रबंधन जीवन और प्रशासन के हर उस मोड में शामिल है जहाँ कार्य निष्पादित होता है तथा व्यवस्था अस्तित्व में होती है।

यद्यपि मानव संसाधन और प्रबंधन विभाग अपने मूल से ही आवश्यक रहा है जिसका उद्देश्य मानवतावादी है। प्राचीन काल में भारत के संदर्भ में मानव संसाधन के प्रबंधन का प्रारंभ कौटिल्य से माना जाता है। कौटिल्य ने 400 ईसा पूर्व अपनी प्रसिद्ध पुस्तक अर्थशास्त्र में मानव संसाधन प्रबंधन के क्रमबद्ध अध्ययन का उल्लेख किया है। पुस्तक के तृतीय अध्याय में श्रम संगठन की व्याख्या की गई है।वेतन एवं मजदूरी का भुगतान उत्पादित किस्म और मात्रा के आधार पर दिए जाने का उल्लेख है। कार्य में अनावश्यक देरी आदि के लिए जुर्माने का भी प्रावधान बताया गया है।

मध्यकाल में, अल्लाउद्दीन खिलजी ने एक बाज़ार को संचालित किया था जिस पर उसने निर्धारित शुल्क लगाया था। इससे वह अपने लोगों को नियत वेतन प्रदान करता था। ऐसा कर उसने महँगाई से लड़ लोगों के जीवनस्तर को सुधारा।स्वतंत्रता से पूर्व सन 1920 में व्यापार संघ अस्तित्व में आया। कुछ विद्वानों ने मानव संसाधन प्रबंधन का इतिहास बताते हुए कहा है कि इसका उद्भव प्रथम विश्व युद्ध के व्यापार संघो से हुआ है। रॉयल आयोग ने सन 1931 में कामगारों की शिकायतों को देखने के लिए कल्याण अधिकारी के नियुक्ति की संस्तुति दी और कारखाना अधिनियम 1942 के अंतर्गत 500 या इससे अधिक के नियोक्ता के पास एक कल्याण अधिकारी का प्रावधान हो गया। अंतर्राष्ट्रीय प्रबंधन कार्मिक संस्थान व राष्ट्रीय श्रमिक प्रबंधन संस्थान ने कामगारों की समस्याओं का समाधान करने का निर्णय लिया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान कामगारों के अधिकारों के प्रति जागरूकता फैली और सन 1940 से 1960 के बीच देखा गया कि प्रौद्योगिकी से नाता कामगारों के लिए सहायता सिद्ध हो रहा है। 1960 के बाद मानव संसाधन का कल्याण से आगे का विस्तार हुआ। 70 का दशक कामगारों की दक्षता व उनकी कौशल शक्ति पर ध्यानार्थ था। 1980 में प्रौद्योगिकी का आगमन हुआ तथा नए नियम/ विनियमन की आवश्यकता महसूस की गई। 19 वीं शताब्दी में मानवीय मूल्यों व लोगों के विकास पर विशेष बल देते हुए उदारीकरण और कार्यस्थल पर आधुनिक प्रयोगों के साथ मानव संसाधन प्रबंधन के महत्व को रूपायित किया गया।

मानव संसाधन प्रबंधन में समय के साथ परिवर्तन व आधुनिक शैली और प्रयोगों ने इस अनुशासन/ व्यवस्था को अत्यंत प्रभावकारी बनाया है जिसे सूक्ष्म और गहरे ढंग से समझा जा सकता है। यह मानवीय प्रबंधन गैर तकनीकी है पर समस्त तकनीकी व्यवस्थाओं का संचालन-कर्ता मानव इसी प्रबंधन से व्यवस्थित/ सुनियोजित/ संचालित होता है। यह विभाग हर संस्थान/ विभाग में अथवा किसी देश के संपूर्ण विकास व संस्थापन में अपनी भूमिका में होता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, भारत ने अपनी कूटनीति, विदेश नीति तथा प्रौद्योगिकी को आत्मसात कर विश्व में सबका ध्यान आकृष्ट किया है। सरकार की सतत क्रियाशीलता के मद्देनज़र, नागरिकों के जीवन को सहेजने, उनके सामाजिक जीवन को सुविधाओं से समृद्ध करने आदि नित नई योजनाओं (विमुद्रीकरण, वस्तु व सेवा कर (जी एस टी) डिजीटल इंडिया, प्रधानमंत्री जनधन, नया भारत 2022 (संकल्प से सिद्धि), संसद ग्रामीण, बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ आदि) की घोषणा/ शुरूआत भारत के विकास मार्ग को प्रशस्त किया है। इसी प्रकार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई सम्मेलनों में भागीदारी, वार्ताओं/ योजनाओं पर सहमति/ करार ने भारत की

क्षमता को सुदृढ़ किया है। जाहिर है विकास के इन महत्वपूर्ण कदमों में एक कारगर व्यवस्था विद्यमान है जिसे मानव संसाधन प्रबंधन का शानदार मिसाल कहा जा सकता है। योजनाओं के मसौदे से लेकर उसे ज़मीनी स्तर पर क्रियान्वित करने में मानव संसाधन और प्रबंधन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संसद ग्रामीण योजना के अंतर्गत संसद सदस्यों द्वारा गाँव को गोद लेकर उनके विकास को सुनिश्चित करना, यह कार्य मानव श्रृंखला और उसकी योग्यपूर्ण दक्षता स्वरूप मानव संसाधन प्रबंधन के अंतर्गत सिद्ध होती है। आज सरकार की जिन योजनाओं/ नीतियों को ऐतिहासिक की संज्ञा देकर प्रशंसित किया जा रहा है, वह सरकार की प्रबंधन की कुशलता को दर्शाता है। देश की कैबिनेट/ मंत्रालय से लेकर अदना से लगने वाले कार्य में, उपयुक्त कार्मिक का प्रबंधन आवश्यक है।

ज्ञात है कि भारत सरकार में मानव संसाधन विकास मंत्रालय है, जिसके अंतर्गत देश की शिक्षा (प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च) व्यवस्था को शिक्षा की वैज्ञानिक अवस्था से लेकर शोध से देश के विकास को प्रगति पर ले आने का बहुमुखी प्रयत्न किया जा रहा है। शायद प्रबंधन का इससे सुंदर उदाहरण क्या हो सकता है जिसमें देश के भविष्य को शिक्षा की उम्र, पात्रता, योग्यता में वर्गीकृत किया गया है। यह शिक्षा व्यवस्था जिसके ब्लू प्रिन्ट तैयार करने में मानव संसाधन प्रबंधन है। इसी प्रकार समस्त अन्य विभागों जैसे रक्षा, स्वास्थ्य आदि हैं।

मानव संसाधन प्रबंधन की कार्यप्रणाली किसी भी योजना/ संस्थान की सफलता असफलता निर्धारित करती है। इसमे किसी भी कार्य के लिए कार्मिकों का चयन अति महत्वपूर्ण होता है। उसकी शिक्षा/ योग्यता/ दक्षता के आधार पर कार्य का विभाजन होता है। कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे उसके द्वारा कार्य को उचित ढंग से निष्पादित किया जा सके। शासन के अनुपालन व संस्थान के निर्देशानुसार उसके कार्य निष्पादन के लिए आवश्यक भौतिक सुविधाओं को सुनिश्चित किया जाता है। मानव संसाधन प्रबंधन में प्रमुख गुण नियोजन है। नियोक्ता द्वारा संस्था के लिए आवश्यक व पर्याप्त मानव शक्ति की प्राप्ति, विकास, अनुरक्षण और उपयोग संभव हो। जिसमें मानव संसाधन का समुचित प्रयोग किया जा सके। इसमें निर्देश व नियंत्रण अनुशासन को स्थापित करता है, संभव है मानव संसाधन के समस्त गुण या कार्यकलाप हर हाल में मनुष्य/ कार्मिक को कार्य के प्रति उत्साहित कर लक्ष्य के लिए प्रेरित करता है। यह महज एक अनुशासन/ विषय नहीं है बल्कि अंतरानुशासन है। इसमें प्रबंधन के साथ मनोविज्ञान, सांख्यिकी, गणित, संचार, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र आदि विषय शामिल हैं, जो इस व्यवस्था को परिपूर्ण बनाती है।

मानव संसाधन प्रबंधन के लिए आवश्यक है कि कार्मिकों में सदैव स्थापित करे। उनकी समस्याओं के प्रति संजीदगी के साथ संबंधित तथ्यों का अध्ययन करे व अपनी भावनाओं/ संवेदनाओं को हावी न होने दे। कूटनीतिज्ञता से कार्य करे तथा किसी भी परिस्थिति में कार्मिकों से किसी भी प्रकार के विवाद का शीघ्रातिशीघ्र निपटान करे। यह सदैव ध्यान रखा जाए कि कार्मिकों की नाराजगी संस्थान की उत्पादन/ माहौल को प्रभावित कर सकती है। आज मानव संसाधन का प्रौद्योगिकी से साहचर्य निश्चय ही सुखद है। एसएपी, ईआरपी इत्यादी से कार्मिकों में मैनुअल की प्रथा समाप्त हो रही है जिससे कार्य और भी निष्पक्ष और पारदर्शी हो गए हैं। इससे समय की बचत होती है और कार्य की गति में इज़ाफ़ा भी हुआ है।

कुल मिलाकर मानव संसाधन प्रबंधन किसी भी कार्य की कुशलता/ सफलता की कुंजी है। कार्य के प्रति समर्पण निष्ठा का आदर्श, स्मार्ट कार्य संस्कृति, सकारात्मक सोच व सतत चिंतन से सर्जित नए विचारों से अपव्ययों को नियंत्रित करके मानव संसाधन की क्षमता में एक ऐसी तकनीकी विकसित की जा सकती है जिसका अंतिम लक्ष्य, लागतों को कम करके अधिक उत्पादन अथवा दक्षता सुनिश्चित कर सफलता को प्राप्त करना है।

डॉ. धीरज कुमार मिश्र
कनिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा)
खान एवं परिशोधन संकुल, दामनजोड़ी

फ्रेंड-रिक्वेस्ट

मॉर्निंग वॉक करते समय राजीव के मोबाईल में मैसेज आने की घंटी बजी। फेसबुक का मैसेज था। वो मैसेज पूर्णिमा जोशी का था-जिसने उसे फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजी थी। पूर्णिमा का नाम पढ़कर यकायक उसकी सांस तेज हो गयी थी। पहले तो उसे आश्चर्य लगा मैसेज देखकर कि बीस साल बात आज उसे कैसे याद आया। मन में यकायक हजारों ख्यालों के सिलसिले चल पड़े थे। उसकी चाल के साथ-साथ दिल की धड़कन भी तेज हो चली थी।

रंजना के बार-बार कहने पर एक साल पहले राजीव ने फेसबुक में अपना अकाउंट खोला था। आज सुबह जब उसने फेसबुक खोल था तो रंजना और राजीव के एक साल की फेसबुक की दोस्ती पर बधाई के साथ साथ तस्वीरों का कोलाज खुल गया था। पिछले साल खींचे गई कई फोटों को एक फिल्म की तरह देख रहा था। रंजना वैसे तो उसकी पत्नी थी पर दोनों की दोस्ती पत्नि-पत्नी से कहीं बढ़ कर थी। जो उन्हें देखता "मेड फॉर इच अदर" बोल उठता।

आज उनकी शादी को पूरे बीस साल हो गये थे। पर उनका साथ तो लगभग पैतालीस साल का था। हर कोई आश्चर्य से पूछता, "पैंतालीस साल का साथ, कैसे संभव है भाई.....।" फिर उन्हें पता चलता कि रंजना और राजीव ने नर्सरी से आज तक का जीवन एक साथ काटा था। स्कूल में वो दोनों एक साथ थे, इंजीनियरिंग में भी दोनों एक थे और शादी के बाद आज भी दोनों एक साथ हैं। शायद भगवान ने दोनों की जोड़ी बचपन में ही बना दी थी-ऐसा सभी सोचते हैं पर ऐसा नहीं है।

रंजना और राजीव वैसे तो हमेशा साथ पढ़ते थे पर दोनों में इतनी खास दोस्ती नहीं थी, कारण था राजीव बचपन से पूर्णिमा के साथ ज्यादा रहता था पूर्णिमा उसकी पड़ोसी थी। पूर्णिमा को भी जैसे भगवान ने समय लेकर बनाया था। देखने में जितनी सुंदर- पढ़ने में भी उतनी ही होनहार। पूर्णिमा क्लास में हमेशा फर्स्ट आती थी। राजीव ने जितनी भी कोशिश की फर्स्ट आने की, पर वो हमेशा मुश्किल से सेकंड ही हो पाता था। पर राजीव और पूर्णिमा काफी गहरे दोस्त थे। उस समय रंजना का राजीव की तरफ़ झुकाव तो था पर राजीव को पूर्णिमा के सिवाय किसी से कोई लगाव नहीं था।

जैसे-जैसे समय की गाड़ी चलती गयी। राजीव, पूर्णिमा और रंजना साथ-साथ आगे बढ़ते रहे। तीनों ने अच्छे अंकों से +2 परीक्षा पास करके आईआईटी में दाखिला लिया। और तो और तीनों ने ही कंप्युटर साईंस में ही दाखिला लिया।

उन तीनों की नजदीकियां भी वैसे ही बरकरार रहीं, कैसे ना हो तीनों कानपुर शहर से जाकर, कानपुर आईआईटी में साथ पढ़ रहे थे तो करीबी तो बढ़नी ही थी। एक रास्ते के तीन लेनों की तरह साथ-साथ चलते तीनों ने ही फाईनल एग्जाम डिस्टिंक्शन के साथ पास किया तीनों ही को, कई कंपनियों में नौकरी भी मिल गयी थी। अब तीनों को अपनी जिंदगी की आगे की मंजिल को चुनना था। राजीव चूंकि मां-बाप का इकलौता बेटा था, उसने दिल्ली की एक मल्टीनेशनल कंपनी ज्वाईन कर ली। मां-बाप को छोड़ विदेश जाने का न उसने कभी सोचा था और ना ही उसके लिए संभव था। पिताजी कानपुर में रेलवे स्टेशन मास्टर थे और माँ भी हमेशा अस्वस्थ रहती थी। वैसे पिताजी ने एक-दो बार कहा जरूर था कि, "बेटा आईआईटी के बाद तो बच्चे विदेश निकल जाते हैं- अगर तू चाहे तो चला जा, हम लोग भी यही चाहते हैं। तुझे ऐसा न लगे कि, हमारी वजह से अपना अच्छा कैरियर छोड़ रहा है।" पर राजीव अच्छी तरह जानता था पिताजी और माताजी उसे जान से भी ज्यादा स्नेह करते थे। एक दिन भी उसे ना देखें तो कितने बेचैन हो जाते थे। दोनों के लिए मानों उनकी जिंदगी सिर्फ राजीव की खुशी में थी। यह सब जानकर वो कैसे चला जाये । उन्हें यहां छोड़कर उसने विदेशी कंपनियों की कई अच्छी नौकरी के ऑफर को छोड़कर दिल्ली में नौकरी ज्वाईन कर ली।

उधर पूर्णिमा के पिताजी एक सरकारी कम्पनी के निदेशक बन गए थे, उन्होने पूर्णिमा को अमेरिका के एक विश्वविद्यालय में पीजी में दाखिला करा दिया। पूर्णिमा को एक तरफ तो अमेरिका में पढ़ने की खुशी थी वहीं राजीव को छोड़कर जाने का दुख भी था। कुछ महीनों बाद वो अमेरिका चली गयी थी। उसके चले जाने से राजीव की जिंदगी मानों हिल गयी थी । वो जैसे अकेला रह गया था। उसे याद है जब वो पूर्णिमा को छोड़ने एयरपोर्ट गया था तो दोनों की आँखें नम हो गयी

थी । उस दिन पूर्णिमा ने वादा किया था कि एम.टैक खत्म कर वो इंडिया वापस आ जायेगी। राजीव ने रात-दिन दो साल उसका इंतजार किया था। इस बीच पूर्णिमा के पिताजी रिटायर्ड होकर सपरिवार बैंगलोर में बस गये थे। अब जब भी पूर्णिमा देश आती तो बैंगलौर रहकर वापस चली जाती थी। एम.टैक खत्म होने पर पूर्णिमा ने पीएचडी ज्वाईन कर ली थी। यह सुनकर राजीव का दिल टूट गया था। धीरे-धीरे पूर्णिमा का विदेश में रहना चलता रहा। उसने पूर्णिमा को धीरे-धीरे दिल से निकालना शुरू कर दिया था। पर किसी ने ठीक ही कहा है, "पहला और वो भी अगर बचपन का हो तो प्यार मिटाना बहुत मुश्किल होता है।" राजीव के लिए पूर्णिमा को भुलाना शायद एक सजा बनी रही थी।

कुछ सालों बाद उसे पता चला कि पूर्णिमा ने एक अमेरिकी लड़के से शादी कर ली थी। उसने उसे शादी का कार्ड तो नहीं भेजा था पर उसे रंजना के जरिए यह खबर पहुंचवा दी थी।

उस दिन से राजीव ने पूर्णिमा को पूरी तरह से भुला दिया था कुछ महीनों बाद उसकी रंजना से शादी हो गयी थी और दोनों की जिंदगी फिर से खुशियों से भर गई थी।

पर आज पूर्णिमा की फ्रेंड रिक्वेस्ट पढ़कर वो कुछ पल के लिए पुरानी यादों में चला गया। मन कर रहा था कि फ्रेंड रिक्वेस्ट को ड्लीट कर देने को, अब दोस्ती का क्या मतलब। इतने सालों में वैसे भी दोस्ती का कुछ भी बाकी नहीं बचा है, पूर्णिमा ने एक इल्तजा की थी उसे ठुकरा देना क्या अच्छा होगा। न जाने कैसे हालात में उसने अपने जीवन के निर्णय लिये होंगे- वो तो उसने कभी भी जानने की कोशिश नहीं की थी। इसी कशमकश में वो पिछले दो घंटों से मोबाईल में नज़र गड़ाए सोच में डूबा बैठा था।

"राजीव! चाय तैयार है बालकनी में आ जाओ....." रंजना ने रसोईं से आवाज दी।

"हां! जरा दो मिनट में आता हूँ," कहते हुए वो पूर्णिमा की फ्रेंड रिक्वेस्ट को एक्सेप्ट करके बालकनी की ओर चल पडा था। उसे पत्नी और दोस्ती का दायरा भली भांति समझ आ गया था।

सदाशिव सामन्तराय 'सुमन'
कार्यकारी निदेशक (वाणिज्य-सामग्री)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

"जीवन संगम"

कभी सागर की लहरों सा उछलता,

तो कभी सरोवर सा शीत शान्त है जीवन!

कभी झरने सा मचलता,

तो कभी झील सा ठहराव है जीवन!

कभी श्रेष्ठ पर्वत सा अभिमानी,

तो कभी जड़ धरा सा विनम्र है जीवन!

कभी अनन्त आकाश सा श्वेत,

तो कभी क्षीण रसातल सा तमस है जीवन!

कभी वीणा सा मधुर,

तो कभी विलाप सा तीक्ष्ण है जीवन!

कभी प्रफुल्ल, कभी निराश, कभी सार्थक, कभी निरर्थक,

'अभि' सुख-दु:ख का संगम है जीवन!

अभिषेक कुमार मौर्य
कनिष्ठ प्रबंधक - यांत्रिक, दामनजोड़ी

जिंदगी की मर्यादा

सिर्फ एक सफर बनकर
रह जाती है जिंदगी।
किसी मंजिल पर नहीं
पहुंच पाती है जिंदगी।
मंजिलों को पाने की
अंधाधुंध जूनून में।
इंसान चाहे अपनी
सारी हदें पार कर ले।
पर अपनी मर्यादाओं को
नहीं तोड़ पाती है जिंदगी।
इंसान सब पाना चाहता है।
भागकर-दौड़कर, समय से
आगे निकल जाना चाहता है।
दिन के बाद कायदे से
हर रोज रात होती है।
पर वह अभागा इंसान
तब भी जागता है
जब सारी दुनिया सोती है।
सितारों तक पहुंचने की चाह में
जमीं को छोड़ देता है।
सब पाने की धुन में
सारी मर्यादाएं तोड़ देता है।
दिन का सुकून और
रातों की नींद गंवाकर।
क्या हासिल कर लेता है इंसान?
बचपन बहुत जल्द खो जाती है।
और जिंदगी की दौड़ में
जवानी तनहा हो जाती है।
और वह सितारों तक भी
नहीं पहुंच पाता है।
थक-हार कर एक दिन
इसी जमीं पर गिर जाता है।
चाहे लाख कोशिश कर ले
वह फिर उड़ नहीं पाता है।
तब अपने थके-हारे और टूटे
शरीर को ढ़ोते हुए
इंसान सोच में पड़ जाता है।
कि इस बेतहाशा दौड़ से
आखिर क्या खोया, क्या पाया?
कुछ मंजिलें यदि हासिल भी कर लीं,
तो जो बचपन और जवानी की
कीमत पर मिली हों,
उन मंजिलों का क्या फायदा?
उसकी अंतरात्मा चीत्कार उठती है।
वह जीना चाहता है फिर से
उन बीते हुए पलों को।
पर खोयी हुई जिंदगी
कभी वापस नहीं मिलती।

विनय ठाकुर
सहायक महाप्रबंधक, (मानव संसाधन विकास)
दामनजोड़ी

बारिश

देखो बारिश का मौसम आया,
साथ में अपने खुशियां लाया,
नन्ही नन्ही बूंदों ने फिर,
लोगों को है खूब नचाया।

देखो बारिश के खेल निराले,
खेत, खलियान, नदियां और नाले,
झूमे जमकर मौज मनाए,
उछल कूद कर शोर मचाएं।

बंजर भूमि हँसकर बोली,
ना कर हमसे आँख मिचौली,
मेरी भी तुम भर दो चोली,
हम तो है सदियों से भोली।

बारिश तो अपने खेल दिखाए,
कहीं खुशहाली, तो कहीं बाढ़ लाए,
नदियों को ये मार्ग दिखाएं,
सागर को ये भरती जाए,

प्रकृति के इस घटना क्रम को,
बारिश अपने रंग से खूब सजाए।

मिलिंद् नीलकंठ वानखेड़े
वरिष्ठ तकनीशियन,रोलिंग प्लांट (यांत्रिक)
अनुगुळ

भ्रम

आज सुबह से ही बड़ी तेज धूप थी। सूरज जैसे बदला लेने पर उतारू था। समझ में ही नहीं आ रहा था कि कौन सा मौसम है। धूप की अकड़ जेठ की गर्मी का भान कराती थी जबकि कैलेंडर फड़फड़ाते हुए हँस रहा था कि लो कर लो बात....! जुलाई है भइया... बरसात का मौसम है। सावन शुरू हो चुका है! पर किसी का मज़ाक उड़ा कर हँसने वालों को प्रकृति कभी नहीं बख्शती! अचानक ज़ोरों की हवा चलने लगी और कैलेंडर मियाँ हवा के कारण कील में लटके-लटके ही चक्कर खाने लगे। थोड़ी ही देर में तेज़ बारिश शुरू हो गई।

स्कूल की थकान उतारने के लिए मैंने जोरों की अंगड़ाई ली और बाहर बरामदे में चली आई जहाँ से शीतल पवन और बारिश दोनों का मज़ा ले सकूँ। कुर्सी पर बैठकर मैं झमाझम होती हुई बारिश का मज़ा लेने लगी...। हवा के झोंकों से उड़ती बूँदें गालों को छूकर उन्हें गुदगुदा रही थी। तभी मैंने देखा कि बरामदे के गेट के पास रखी बेल ख़ूब ज़ोर-ज़ोर से हिल कर लहरा रही थी मानो झमाझम बरसती बारिश के साथ सुर में सुर मिलाना चाह रही हो। तभी उससे दोगुनी तेज़ी से मैंने सामने लॉन में लगे आरकेरिया के पेड़ पर चढ़ी मनी प्लांट की बेल को तपते देखा वो गुस्से में बरामद वाली बेल पर चिल्ला रही थी....."क्यों री...बड़े मज़े ले रही है तू बारिश के....ज़रा कभी अपने आस-पास भी देख लिया कर...दुनिया का क्या हाल हो रखा है....ये जो तू बारिश को देख कर खुश हो रही है ना कि अब धरती खिल उठेगी तो ये तेरा भ्रम है।""माफ करना दीदी, आप क्या बोल रही हैं मुझे समझ नहीं आ रहा है...।" नन्ही बेल ने घबराते हुए कहा।

"हाँ, तुझे समझ आएगा भी कैसे... तुझे दिन ही कितने हुए हैं इस दुनिया में आये... तुझे क्या पता कि ये धरती क्या थी... और क्या कर दिया इन मानवों ने...!!" गुस्से में भन्नाते हुए मनी प्लांट ने कहा।"ये धरती कैसी थी दीदी... मुझे तो ये अभी भी बहुत सुंदर लगती है!"भोली बेल ने कहा।"नादान...क्या मेरी कटी-छठी काया नहीं दिखाई दे रही तुझे? बस यूँ समझ ले के इस धरती का भी यही हाल कर दिया है इन लोगों ने....।""दीदी...बुरा मत मानना....मुझे लगा तुम सदा से ही ऐसी ही हो...जीर्ण और कमज़ोर..!""नहीं रे भोली... न तो मैं ऐसी थी और न ही ये धरती...कभी ये धरती श्यामला हुआ करती थी। इस माह में तो इसका यौवन देखते ही बनता था। खेतों में फसलें लहलहाती थीं....नदियाँ पानी से भर के छलाँगें मारकर अपने प्रियतम समुद्र से मिलने चल देती थीं और रास्ते में खेतों को सींचती चलती थीं। किंतु इस दुनिया के मुट्ठीभर अत्यधिक महत्वाकांक्षी या यों कहें कि स्वार्थी लोगों ने अपने फायदे के लिए वनों का सफ़ाया कर डाला और ईंट गारे के वन खड़े कर दिए। यही नहीं अपनी देह को मौसम के हिसाब से न ढाल कर वातानुकूलित कमरों में रहने की आदत डाल कर इन्होंने पूरी धरती का तापमान बढ़ा दिया है।"

"हाय दैया...ऐसा है ये मनुष्य...!" नन्ही बेल डर से काँपने लगी।"अरे तूने अभी देखा ही कहाँ है... ये तो निर्लज्ज हैं...सावन तो वर्षा का ही दूसरा नाम है... पर ज़रा देख...कहीं हफ्तों से बारिश नहीं हुई है, और कहीं झमाझम बारिश से बाढ़ आ गयी है। ये अपनी करतूतों को खुद ही भोग रहा है। पहले बारिश में किसान फलते फूलते थे अब वे फसलों के बर्बाद होने के कारण आत्महत्या कर लेते हैं... अभी हाल ही में तापमान के बढ़ने के कारण समुद्र के चक्रवाती तूफान ने यहाँ क़हर ढाया था। सारे पेड़ धराशायी होकर जड़ से उखड़ गए... वो तो कहो कि पेड़ों ने हवाओं को झेल कर खुद को फ़ना कर दिया वरना इसकी ये शानदार इमारतें भी ढह जातीं...!" फड़फड़ाती हुई मनी प्लांट की बेल ने कहा।

"ये तो बिल्कुल अच्छा नहीं हुआ दीदी....।"दुःख में नन्ही बेल ने सर झुकाते हुए कहा। "अब तुझे क्या बताऊँ... ये अरकेरिया का पेड़...मेरा दोस्त...जिसने मुझे पनाह दी थी...ज़रा देख उसका क्या हाल हुआ है... उसकी सारी टहनियों ने हवा की मार को झेला ताकि इसकी सामने वाली इमारत बची रहे... इस कोशिश में उसकी सारी खूबसूरत टहनियाँ टूट गईं और वो बदसूरत हो गया। उसने बहुत कोशिश की कि मैं बच जाऊँ पर मेरे पत्ते भी हवा की मार से फट गए... सामने के फलों के सारे पेड़ टूट गए। मैं तो अभी भी डर रही हूँ कि पता नहीं फिर कहीं दूसरा तूफान न आ जाये।" "पर दीदी मुझे तो लग रहा था कि अरकेरिया भैया आज बहुत खुश हैं। इस झमाझम बारिश का वो खूब आनंद ले रहे हैं और सामने घर वाले भी बारिश में नहा रहे थे और खूब आनंद ले रहे थे।"

"अरे पगली ये जो तू देख रही है न, ये सब तेरी आँखों का भ्रम है... इस अरकेरिया के ऊपर से बहता पानी इसके आँसू हैं जो हर बारिश में इसकी आंखों से झरते हैं क्योंकि इसे अपनी टहनियों के खोने का ग़म नहीं है बल्कि इसपर रहने वाले पक्षियों और गिलहरियों के घरों के उजड़ जाने का ग़म है। और ये इंसान भी भ्रम में ही जी रहे हैं क्योंकि इन्हें पता नहीं कि अब बरसने वाला पानी या तो बाढ़ लाने वाला है या सूखा... और तू देख लेना पानी का जलस्तर जितना कम होता जा रहा है पूरी दुनिया में तो अगला विश्वयुद्ध पानी के लिए होगा।" "जी लेने दे इन्हें सपनों की दुनिया में... इनका भ्रम तो उस दिन टूटेगा जब बिना पेड़ों और परिंदों की इस दुनिया में ये अकेला ठूँठ की तरह खड़ा रह जायेगा... तन्हा.... बिल्कुल तन्हा.....!!"

शगुफ़्ता जबीं
पत्नी- श्री जावेद रेयाज़, महाप्रबंधक
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

ललकार

मत करो अभिमान ताकत का, हमसे न लड़ पाओगे।
कश्मीर के चक्कर में, पूरा पाक दे जाओगे।।
कितनी बार लड़कर भी, कुछ ना समझ पाए हो।
हारे हो कितनी बार, और रण में न टिक पाए हो।
हमसे लड़ने के लिए, अफ़गानी कुर्द भी लाये हो ।
हमें हराने की भूल में, अपना कचरा कर जाओगे ।
कश्मीर के चक्कर में, पूरा पाक दे जाओगे ।।
अगर बम तुम्हारे चीनी है, तो चायवाला हमारा मोदी है।
जिसने आँखे टेढ़ी की हम पर, सेना ने कब्र उसकी खोदी है।
समझो रोती उन माँओ को, मौत जिनके बेटों की होती है।
सोचो लालच और नफरत में, कितनो के चमन जलाओगे।
कश्मीर के चक्कर में, पूरा पाक दे जाओगे ।।
हजारो करोड़ो का बारूद, तुमने तोपों में भरवाया है।
दुनिया को डराने के लिए, परमाणु बम भी बनाया है।
दिल में भरकर नफरत को, तुमने कश्मीर जलाया है।
हिन्दोस्ताँ को मिटने का, गर ख्वाब आँख में लाओगे।
कश्मीर के चक्कर में, पूरा पाक दे जाओगे ।।
भारत हमारी माता है, और कश्मीर माथे का चन्दन है।
इस देश का हर फौजी, विंग कमांडर अभिनन्दन है।
आतंकवाद से झुलस गये, अब बंद किया ये क्रंदन है।
न होगा नक़्शे पर पाक,
अगर "ना-पाक" कदम उठाओगे।
कश्मीर के चक्कर में, पूरा पाक दे जाओगे ।।
शान्त रहो, खुशहाल रहो, ना कभी जंग की बात करो।
हम दोस्त है सच्चों के, ना कभी गबन की बात करो।
उधारी के चक्कर छोड़ो, कुछ अपने देश में ईजाद करो।
आज़ादी का लालच दे कर, गर बन्दूक हाथ में थमाओगे।
कश्मीर के चक्कर में, पूरा पाक दे जाओगे ।।

चिरन्तन श्याम
प्रबन्धक (यान्त्रिकी)
ग्रहीत विद्युत संयन्त्र, नालको, अनुगुळ

अति परिचय ते होत है...

हिंदी, पढ़ना, पढ़ाना, लेखन कार्य करना, पत्रिका, समाचार पत्र प्रकाशित करना, सिनेमा धारावाहिक, डेली सोप से रोजगार तलाशना या नीति-विषयक के पक्ष का पैरोकार होकर सरकार की तथाकथित भाषा नीति की अनुपालन में रत रहना किसी भी नज़र या नज़रिए से अनादर कर पक्ष प्रस्तुत नहीं करता।

कार्य का महत्व उसकी प्रकृति पर तब निर्भर करता है, जब कार्य की प्रकृति-उसकी गुरुता को समझने वाला विकसित मन या मानस हो अन्यथा आलोचना तो प्रधानमंत्री के कार्य और उच्चतम न्यायालय के निर्णय की भी होती है। तो इस स्थिति में यह बात सहज स्वीकार्य हो जाती है कि मेरे या आपके सृजन कर्म-लेखन कर्म-धर्म कर्म या कर्म-कर्म की आलोचना या चर्चा न हों! चर्चा वैसे चर्चित होने का एक पहलू प्रस्तुत करता है, तो इस विमर्श में अरुचि आता कहाँ से है? तो अब सुनिये का पढ़िए यह कि किसी की अरुचि का ठेका तो भाई किसी ने लिया नहीं है.....एक ही परिवार में रुचि भेद होना जब लाज़मी है तो एक कार्यालय या संस्थान में लोगों के बीच पूर्ण रुचि की अपेक्षा ही निहायत निरी कल्पना की बात है।

बात शुरू तो बात से ही होती है और यहाँ भी यही हुआ है, पर बात से शुरु होकर बात, बात से होते हुए बात तक ही पहुँचे या बात तक ही बात रहे तो कोई बात नहीं होती पर; सच और मानक-(व्यवहारिक!) यह है कि बात की बात का अंतिम पड़ाव आपसी वैमनस्य, कटुता, नापसंदी या आम चलन में कहें तो बहस तक ले जाती है। जी हाँ बहस ही कहा जाना ठीक है, क्योंकि परिचर्या में कुछ सृजन की संभावना होती है, पर बहस-सृजन कम सर्जन ज्यादा होता है जिसमें व्यक्ति विशेष अपने 'स्व' से न तो बाहर आता है और न ही 'पर' तक अपने 'स्व' को विकसित करने की राह ही तलाश पाता है।

प्रचलित या कहें कि मान्य? सत्य है कि पुस्तकें मनुष्य की श्रेष्ठ मीत हैं हमने भी इस विषय पर कई निबंध लिखे होंगे पर सवाल यह नहीं है-सवाल यह है कि पुस्तकें यदि मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र हैं तो पुस्तकों का चलन कम क्यों हो रहा है, मित्रता टूट क्यों रही है, फेसबुक ह्वाट्सएप्प, ट्वीटर, और न जाने कौने-कौने में सोशल-साइटस समाज से अलग मानव को एक वर्चूअल(अस्थायी) दुनिया का नागरिक बना रहे हैं, एक स्क्रीन पर तो व्यक्ति की सारी सामाजिकता , उसकी रुचि, उसका सम्मान दिख रहा है पर यही सवाल जब वास्तविकता –सच्चाई के प्रश्नवाचक चिह्न के साथ पूछी जा रही है तो जबाव में यह मिल रहा है कि अब छोटे परिवार, सीमित संबंध, एकाकी जीवन, मनोवैज्ञानिक इलाज, दो कमरे के घर का नज़ारा ही सामने आ रहा है जो फिर उसी व्यक्ति का विश्लेषण कर, उसकी अरुचि और उसके अनादर के समुचित कारण का पक्ष रखता है।

मानव की विकास यात्रा- भाषा की विकास यात्रा - सभ्यता की विकास यात्रा-जीवन की विकास यात्रा-विज्ञान की विकास यात्रा- कला की विकास यात्रा का पोषक तो है ही- उसका पल्लवित रूप भी कही जा सकती है। सभ्यता का बीता कल इस बात की गवाही देता है कि भाषा ने लगातार मानव की प्रगति, उसके उद्धार और उसके समाहार में निर्णायक एवं महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। क्या लगता है आपको? योगदान देने वाली भाषा कौन सी होगी-यकीनन किसी भी नजरिये से वह आज की अंग्रेजी तो बिलकुल नहीं होगी- भारत और भारतीयता की विकास यात्रा पिछले सैकड़ों वर्षों से लेकर आने वाले सैकड़ों वर्षों तक अंग्रेजी हो ही नहीं सकती- होगी तो वही भाषा जो इस विकास को धारण करने वाले लोगों की मातृ-भाषा हो अब इसमें कोई भी भाषा या बोली स्थान ले सकती है-चाहे वह प्रचलित हो या अप्रचलित –वैसे भी प्रचलन या अप्रचलन किसी भाषा की गुणवत्ता निर्धारित नहीं कर सकता-या यह भी निर्धारित नहीं कर सकती कि वह भाषा कितनी महत्त्वपूर्ण है या अमहत्त्वपूर्ण-इन सच्चाईयों के साथ कारण क्या है कि आज अंग्रेजी के चश्में से भारत, भारतीयता और आधुनिकता को देखा जा रहा है। कारण बस इतना ही है कि, हमारे पास जो है वह अच्छा, उत्कृष्ट, मानक, व्यवहार्य , प्रासंगिक, उपयुक्त नहीं है और यही कारण साथ लेकर हम अपनी काबिलीयत बढ़ाने से ज्यादा वक्त एक भाषा को सीखने में लगा देते हैं। हम इस सच्चाई को जानते हुए भी मूँह फेर लेते हैं कि हमारे अस्तित्व का आधार ही वह भाषा है जिसमें हम सोचते हैं, जिसमें हमारा स्पंदन होता है, जिसमें हमारी साँस चलती है, जिसमें हम हँसते हैं और रोते हैं; वह

अंग्रेजी नहीं है, वह हमारी आत्म भाषा है वह हमारे आत्मा की भाषा है वह हमारी मातृ-भाषा है।

भारत और भारत की भाषाएँ स्वयं में इतनी समर्थ हैं कि इनमें किसी भी संभावना को तलाशा जा सकता है। शर्त है, केवल जूठन को छोड़कर अपनी क्षमता को समझने और उसे विकसित करने की। इस स्थिति को और भी अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ तथ्यों पर नज़र डालते हैं- जिनकी खुद गूगल-बाबा से पुष्टि होती है कि- इंटरनेट पर हिंदी का इस्तेमाल 5 गुणा तेजी से बढ़ रहा है,यूट्यूब पर 97% हिंदी के वीडियो देख जा रहे हैं, इंटरनेट पर हिंदी कंटेट की मांग 94% की दर से बढ़ रही है, 2011 की जनगणना यह बताती है कि, 42 करोड़ 20 लाख लोगों की पहली भाषा हिंदी है। विश्व के लगभग 165 देशों में 600 विश्वविद्यालय एवं 109 विद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई होती है। फेसबुक से लेकर ट्विटर और तमाम सोशल साइट्स पर हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओं का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है, फ्लिपकार्ट और ऑमेजन पर हिंदी भाषा के प्रयोग से खरीददारी की जा रही है, करोड़ों लोग हिंदी का इस्तेमाल द्वितीय भाषा के रूप में कर रहे हैं, आंकड़े यहाँ तक बताते हैं कि हिंदी में किया जाने वाला संवाद 48 करोड़ लोगों द्वारा सीधे समझा जाता है, यू.एन.ओ द्वारा साप्ताहिक हिंदी समाचार का प्रसारण किया जा रहा है, इकोनोमिक टाइम्स और बिजनेस स्टैंडर्ड का प्रकाशित होने वाला हिंदी अंक हिंदी से जुड़ी अनंत संभावनाओं की सत्यता प्रमाणित करता है, स्टार न्यूज- अंग्रेजी में आरंभ हुआ तो पर अधिकाधिक लोगों तक अपनी पहुँच बनाने के लिए हिंदी में प्रसारण कर रहा है, ईएसपीएन और स्टार स्पोर्ट्स जैसे चैनल हिंदी में कमेंट्री दे रहे हैं, वाशिंगटन पोस्ट तो यह तक जाहिर कर रहा है कि- 2150 तक अधिकाधिक व्यावसायिक दुनिया पर हिंदी काबिज़ होगी, गूगल ब्लॉगर्स मिटिंग में 'टेक्नो स्पॉट डॉट नेट' के मालिक श्रीमान आशीष मेहता एवं मानव मिश्र ने यह भी स्वीकार किया है कि गूगल के हिंदी ब्लागर्स की मासिक आय करोड़ो में है- अब सोचना यह है कि फिर हिंदी-अब राजभाषा हो-शिक्षण हो-या पठन क्षेत्र में हो क्या पिछड़ रही है? और यदि हां तो क्यों! यहीं-इसी प्रश्न पर शीर्षक की पुनरुक्ति वाजिब हो जाती है कि- "अति परिचय ते होत है....."- कुछ नागरिकों की मिथ है कि, हिंदी के कार्यान्वयन, पठन या पाठन में नियोजित व्यक्ति का महत्व गौण है। बच्चे का सबसे ज्यादा ध्यान हिंदी पढ़ने में न हो तो चलेगा, हिंदी में कम अंक आएं तो चलेगा, हिंदी को विषय के रूप में बहुत गंभीरता से लेने की आवश्यकता अमूमन नहीं है- चाहे घर में हर सदस्य हिंदी या किसी भी उप बोली का भाषा में बातें करें,घर की उपलब्धि और समस्या का आपस में जिक्र करें, बचपन में बच्चों को MOM और DAD की जगह माँ और पिता बोलना सिखाएं; पर जब मूलभूत आवश्यकता पूरी हो गई या हो रही है तो फिर उससे आगे उसमे ध्यान देने की कतई आवश्यकता नहीं है। इस उद्देश्य में कहीं न कहीं राजनीतिक इच्छा शक्ति की प्रबलता भी कहा जाना चाहिए। सवाल वास्तव में हिंदी या किसी भाषी का नहीं है, सवाल है- देश को एक सूत्र में साधने का। कितने ही महापुरुषों, योगियों के कथन-वाक्य हम उद्धृत करते हैं जिसमें हिंदी की राष्ट्रीय नैसर्गिकता और महत्व को बताया गया है। साल दर साल हिंदी दिवस, विश्व हिंदी दिवस के आयोजन कार्यान्वयन एवं पुरस्कार योजनाएं केवल और केवल आंकड़ों का खेल भर बन रहा है, पर जब नई शिक्षा नीति की बात कहा जाती है तो नियामकों को भी कदम पीछे खींचने पड़ते हैं। अपने शब्दों वाक्यों को पुर्नसृजित करने की आवश्यकता पड़ जाती है। लोग यह समझते तो हैं पर कमोबेश स्वीकार नहीं करते कि- भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं है- यह सभ्यता का प्रतीक-आपसी सामंजस्य का सिलसिला-संस्कृति की रीढ़-क्रियाशीलता का साधन-मस्तिष्क की सक्रियता-परिवेश का आवरण है। इसलिए अति परिचित होते हुए मानव विशेष की सोच एक राष्ट्र-एक चिंतन–एक गान-एक ध्वज और एक भाषा की ओर उन्मुख होनी चाहिए; जिससे यकीनन हमारी सोच, हमारा व्यक्तित्व, हमारी प्रगति- पुख्ता होगी, स्वस्थ होगी और राष्ट्र प्रेरित होगी। तब कार्य की प्रकृति-बात का संदर्भ और संसर्ग दोनों ही सृजनपरक होंगे और मानव की विकास यात्रा वास्तविक अर्थों में फलीभूत होकर देश, समाज, संस्कृति और सभ्यता का शृंगार करेगी। भारत अपने भाषी और अपनी भाषा से सृज्जित होगा; और 'इकबाल' की पंक्तियाँ-"हिंदी हैं हम, वतन हैं हिन्दोस्ताँ हमारा" –भारतीयों के मन को अभिव्यक्त करेंगी-संतुष्ट करेंगी।

रोशन पाण्डेय
सहायक प्रबंधक, राजभाषा,
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

हिंदीः व्यवसाय सहायक के रूप में

किसी भी भाषा का किसी भी संबंधित क्षेत्र की व्यावसायिक भाषा होने के लिए, उस भाषा का वहां की संस्कृति, सभ्यता एवं साहित्य पर अच्छी पकड़ होनी चाहिए। इसके अलावा उस भाषा का संबंधित क्षेत्र में बहुसंख्यक लोगों के द्वारा आम बोल चाल में इस्तेमाल किया जाता हो। उपभोक्ता एवं विक्रेता के परस्पर बातचीत का सहज माध्यम भी हो। उपर्युक्त सभी बातें हमारे देश के लिए हिंदी भाषा पर लागू होती है। अतः हिंदी भाषा को भारत की व्यावसायिक तौर पर सहायक भाषा मानना उचित होगा।

हमारे देश में 58% लोग खेती से जुटे व्यवसाय में लिप्त हैं। ये अपनी उपज को बेचने एवं अपने खेतों में प्रयोग होने वाले खाद की खरीद के लिए हिंदी भाषा के माध्यम से ही संवाद करते हैं। किसी भी खाद कंपनी को अपना खाद को प्रचारित करने के लिए हिंदी माध्यम का प्रयोग ही करना पड़ता है। किसान आम तौर पर सिर्फ वाचिक तौर पर शिक्षित होते हैं उनको अगर हिंदी भाषा में व्यावसायिक ज्ञान दिया जाए तो वे जल्दी समझते हैं।

एफएमसीजी कंपनियों द्वारा भी अपना व्यवसाय विस्तृत करने के लिए हिंदी भाषा का उपयोग करना उचित है। टी.वी. (टेलीविज़न) पर दिखाया जाने वाला एफएमसीजी उत्पादों का प्रचार घर-घर में लोगों के जबान पर होता है। इस बोध में कोई भी नया उत्पाद बाजार में लाने से पहले उसकी स्वीकृति एवं भविष्य के आमद पर विचार करने हेतु संबंधित लोगों के संस्कृति का अध्ययन जरूरी है। शायद यही वजह है कि हमारे देश में इस क्षेत्र में गोदरेज, पतंजली एवं आइ.टी.सी. जैसी देशी कंपनी बहुत लाभ कमा रही है। उदाहरण के तौर पर अगर पतंजली के मामले का अध्ययन किया जा सकता है। बाबा रामदेव ने हिंदी माध्यम से जनमानस पर अपना ईमानदार एवं वैज्ञानिक छवि बनाया। इस छवि का इस्तेमाल पतंजली के उत्पाद को बेचने में किया। उन्होंने जनता से हिंदी भाषा में वार्तालाप किया, यहाँ तक कि साहित्य एवं संस्कृति को आगे किया एवं अपने लिए ब्रांड महत्व स्थापित किया।

चिकित्सक, डाक्टर एवं पुलिसवालों को भी अपनी सेवा प्रदान करने के लिए हिंदी भाषा को माध्यम बनाना ही बेहतर होता है। किसी विदेशी भाषा (अंग्रेजी) का प्रयोग करने से किसी भी संदेश का मूल भाव स्पष्ट तौर पर प्रदान नहीं किया जा सकता। अभी बाजार में कई वेबसाइट, एप्प एवं पोर्टल हिंदी भाषा का प्रयोग का विकल्प प्रदान कर रही है। अमेजन,जोमैट्री, स्पीनी इत्यादि हिंदी भाषा में खरीद बिक्री का विकल्प दे रही हैं। इससे उनके व्यवसाय का कार्य क्षेत्र बढ़ रहा है। उदाहरण के तौर पर हम "खाता बुक" नामक स्टार्टप एप्प के मामले का अध्ययन कर सकते हैं। खाता बुक एप्प में हम अपने कारोबार का लेन देन हिंदी भाषा में रिकार्ड कर सकते हैं। यह एप्प हमारे ग्राहक एवं सप्लायर को हिंदी में स्वतः ही संदेश भेजता है। कार्य-प्रणाली का हिंदी में होने से इस खाता बुक एप्प का तेजी से विकास हो रहा है। इसी तरह माइक्रोसॉफ्ट ने भी अपने ऑपरेटिंग सिस्टम का विकल्प लाया है। बी.बी.सी. भी हिंदी पोर्टल प्रदान कर रही है। इससे उनको भारतीय बाजार पर वर्चस्व बनाने में सुविधा मिल रही है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय का अध्ययन करने से पता चलता है कि, हिंदी भाषियों का दूसरे देश में एक आपसी सांस्कृतिक मिलाप हो जा रहा है। हिंदी भाषा के जानकारी से वे आत्मीय तौर पर भी एवं व्यावसायिक तौर से भी भारतीय लाभ के लिए काम करते हैं। विदेशों से सैलानी जब हमारे देश में आते हैं तो यहां की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गहराइयों को जानने के लिए उन्हें हिंदी भाषा जानने की जरूरत होती है। हिंदी क्रियेटिव राइटर एवं हिंदी ट्रांसलेटर की पढ़ाई करने से सेवा जगत में व्यवसाय को बढ़ाया जा सकता है। ऐतिहासिक तौर पर अंग्रेजी के आने से पहले हिंदी भाषा के रहते हुए भी भारत, विश्व गुरु था। हमारी व्यवसाय अमेरिका, चीन यूरोप से काफी आगे थी। अंग्रेजी के प्रचार प्रसार ने हिंदी को दबा दिया। विदेश भाषा सीखने के चक्कर में छात्र तकनीकी तौर से कमजोर हो गये। आज जरूरत है कि हम हिंदी भाषा का विस्तार करें एवं सांस्कृतिक और साहित्यिक तौर पर ज्यादा से ज्यादा लोगों को इसे व्यावसायिक भाषा बनाने के लिए सहयोग करें।

अखिल कुमार
सहायक प्रबंधक, अनुगुळ

मानवता क्यों मर रही है?

"मानवता क्यों मर रही है?", यह हम सभी के लिए एक बहुत ही गंभीर चिंता का विषय है।

हम भय, अराजकता, तनाव, चिंता, घृणा, अहंकार, शत्रुता और ऐसी ही अन्य कई बुराइयों से भरे समाज में रह रहे हैं जो एक दूसरे के प्रति मानव-प्रेम को बिगाड़ कर रही है। हम इंसानों को मशीन मानने लगे गए हैं। साथी के प्रति हमारे मनोभाव, भावनाएं, देखभाल, सम्मान, लिहाज, विश्वास, आत्मविश्वास दिन प्रति दिन कम होते जा रहे हैं। हमने स्वयं को आध्यात्मिक जीवन के मूल्यों से भौतिकवादी जीवन में ढ़केल दिया है।

हम स्व-केंद्रित बनते जा रहे हैं। हमारी शिक्षा प्रणाली मानवता के सिद्धांतों से दूर हो रही है। मानवता की जड़ें समाज के शैतानों द्वारा काटी जा रही हैं। लोग शांति खो रहे हैं। घर टूटकर बिखर रहे हैं। रिश्ते असत्य होते जा रहे हैं। हम सभी तुच्छ चीजों के लिए एक दूसरे का शोषण करने की चूहा दौड़ में लगे हुए हैं।

राष्ट्र में युद्ध की स्थिति बनी हुई है। ईश्वर के भय से परे आतंकवाद बढ़ रहा है। मूर्खों द्वारा साहित्य पर शासन किया जा रहा है। बात सहन शक्ति के बाहर हो गई है। व्यवसाय केवल मुनाफे के लिए हैं। सार्वजनिक नीतियों ने सेवा की अवधारणा को खो दिया है। देशभक्ति की महिमा खो गई है। मानवता की स्वतंत्रता को गलत तरीके से परिभाषित और बुरी तरह से परिचालित किया जा रहा है।

जब तक विचार शुद्ध होते हैं, तब तक मन कचड़े से मुक्त होता है, कार्य निष्पक्ष होते हैं, संबंध वास्तविक होता है, परिवार एकीकृत होता है, नागरिकों को सम्मानित किया जाता है, विश्व में मानवता की समग्र पुनरावृत्ति असंभव है। पर्यावरणीय क्षरण के प्रभावों की तुलना में मानव भ्रष्टता अधिक भयावह है। आज वफादारी, अखंडता, गुण, चरित्र, व्यवहार, और मनुष्यों के ऐसे कई व्यक्तिगत लक्षणों को, मानवता को फिर से स्थापित करने के लिए एक जीर्णोद्धार करने की आवश्यकता है।

हमें अधिक से अधिक मानवतावादी पोषकों की आवश्यकता है। मानवता सभी बुराइयों, आतंकवाद, दुर्व्यवहार, और समाज में नस्लवाद की ऐसी सभी अमानवीय गतिविधियों का सामना करने का एक उपकरण है। आइए हम बुराइयों के शैतानों को अपने से बाहर निकाल दें। यदि हम मानवता के लिए जीवित नहीं रह रहे हैं तो इसका अभिप्राय है कि हम मृत समान हैं।

आइए हम सब अपनी सोच को और खुद को फिर से परिभाषित करें, खुद को फिर से संवारें, विश्व में मानवता को फिर से स्थापित करने की ओर आगे बढ़ें। दया मानवता की कुंजी है जिससे व्यवहार में चमक आती है, नैतिकता सचेतन बनाती है, कृतज्ञता अच्छाई को बढ़ाती है, ईमानदारी पवित्रता प्रदान करती है, जिससे मानवता को कायम रखने का बल मिलता है।

हम मानवता निर्माण के कार्य को पुनः आरंभ करें। मानवता के प्रति अपनी दृष्टि को फिर से परिभाषित करने के लिए स्वयं का पुनः मूल्यांकन करें। व्यवहारिक मस्तिष्क से आगे अपनी प्रेरित बुद्धिमता का उपयोग करें। मानवता के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलने से व्यवहार में बेहतरी आती है। गुणवत्ता-पूर्ण जीवन जीना शुरू करें। आप जो भी करते हैं उसमें गुणवत्ता की तलाश करें। सुनिश्चित करें कि आप सभी के प्रति नैतिक हैं। जैसा कि, चरित्र संस्कृति बनाती है, इसलिए इसे सभी में उत्पन्न होने दें। मानवता के दृष्टिकोण को अपनाएँ। इसे सभी में मरने से रोकना हमारी जिम्मेदारी है। आइए हम सभी इसे जीवित रखने की सच्ची भावना को फिर से पोषित करने का संकल्प लें।

हर मानव को याद रखना होगा कि, उसमें एक वास्तुकार है।

भानूप्रिया राउत
सतर्कता विभाग,
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

उत्कृष्ट बनने की उत्कंठा रखें

मनुष्य जन्मजात योद्धा है!

मैं सर अल्बर्ट आइंस्टीन की स्वर्ण कहावत से आरम्भ करता हूं, "हर कोई प्रतिभाशाली है। लेकिन यदि आप एक मछली को उसके पेड़ पर चढ़ने की उसकी क्षमता से परखेंगे तो वह अपना पूरा जीवन इस विश्वास के साथ जीएगी कि वह बेवकूफ है।"

मनुष्य हर सुबह नई शुरूआत का अनुभव करने के लिए पैदा होता है। हमें एक नए मिशन, दृष्टि, उद्देश्यों और लक्ष्यों के साथ हर दिन जन्म लेते रहना है। अपनी प्रेरणा को चरम ऊँचाई तक पहुँचने दें। आप तब तक आराम नहीं करें जब तक आप उत्कृष्ट के शिखर तक नहीं पहुँचते।

मनुष्य का जन्म एक योद्धा के रूप में हुआ है। अपने सपनों के लिए लड़िये, वे साकार होंगे। प्रेरणा वृत्ति को जीवित रखती है। अपने अस्तित्व को महसूस करें। यह आगे रहने की भावना को बढ़ाता है। आप त्रुटिहीन लक्ष्य स्थापित करने में समय बर्बाद ना करें। कोई नहीं जानता कि अंत लक्ष्य क्या होगा? ज्यादा जरूरी है कि आप अपने लक्ष्य की यात्रा आरंभ करें।

चलते रहिये और लक्ष्य आप तक पहुँच जाएगा। आपकी यात्रा हमेशा लक्ष्य के सपने के साथ शुरू होती है। योजना, आयोजन, निर्देशन सब मनुष्य की इच्छा का पालन करते हैं। पहले प्रेरणा की इच्छा रखें; तो फिर इस प्रेरणा में जीवन की उत्कृष्टता तक पहुँचने की शक्ति है। आप आगे बढ़ो और इसे गले लगालो। आप में क्षमता के विस्तार की कल्पना कीजिए।

अस्तित्व अनंत है। आदमी की इच्छा भी अनंत है। हर दिन आपके द्वारा रंग भरने के लिए एक नया कैनवास प्रतीक्षा रत है। जाइये अपने सपनों को हकीकत में रंगिये। हर दिन एक नया गीत है जो आपके द्वारा गाये जाने की प्रतीक्षा कर रहा है। अपने गानों को हकीकत में गाते जाइये। कोई आपको नहीं रोक रहा है। आपको अकेले ही कदम बढ़ाना है।

जीवन एक इंद्रधनुष की तरह है। इसे अस्तित्व के रंगो के माध्यम से सजाया गया है। एक कोरा कागज उद्देश्यपूर्ण हो जाता है जब उसे इन रंगों से भरा जाता है। सुनहरी पीली बढ़ती भोर, हरे परिदृश्य, नील और आसमानी आकाश, बर्फ के सफेद पहाड़, बसंत के बगीचे में झूलते हुए बैंगनी डफोडिल्स, लाल और डूबती गोधूली बेला की धूसर छाया, हमारे अस्तित्व के विचारों को सक्रिय करते हैं। हमारी आकांक्षाएं हर बार पूरी नहीं होंगी, लेकिन हमारे आकांक्षी होने का अनुभव निश्चित रूप से हमें बदल देता है। सपने कभी मरते नहीं। आदर्श कभी नहीं मरते। सत्य कभी नहीं मरता। मूल्य कभी नहीं मरती। बुद्धि कभी नहीं मरती। अनुग्रह कभी नहीं मरता। प्यार कभी मरता नहीं। मानवता कभी नहीं मरती। प्रेरणा कभी नहीं मरती। आत्मा कभी नहीं मरती। नेकी कभी नहीं मरती। अच्छाई कभी नहीं मरती। अपनी आस्था विश्वास और आशा को कभी डूबने मत दीजिए। अगर वह चल रहे हैं तो आपके जीवन की दुनिया भी चलती रहेगी। मानवता का विजेता, मानवता का नेता, मानवता का सुधारक बनने की कोशिश कीजिए।

भगवान की दृष्टि आदमी की उत्कृष्टता है। परिवर्तन एक प्रक्रिया है, वस्तु नहीं। भाग्य हर आदमी के द्वार पर है।

जीवन एक अवसर है। बहादुर बनिए जीवन को ललकारिए। अगर आप उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित हैं, तभी आप पर भगवान की कृपा हो सकती है।

डॉ. श्री रमन दुबे
वरि. कार्यपालक (संविदा, प्रबंध)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

महिला-सशक्तिकरण

प्रस्तावनाः महिला सशक्तिकरण को बहुत ही सरल भाषा में परिभाषित किया जा सकता है कि यह महिलाओं को शक्तिशाली बनाने की दिशा में उठाया गया कदम है। ताकि वह अपने जीवन और समाज के विषय में जागरूक हो और अपने अधिकारों को प्राप्त करने में सक्षम हो। भारत के संविधान में यह प्रावधान है कि, पुरुष और महिलाओं को समान अधिकार प्रदान किए गए हैं। प्राचीन काल में महिलाओं को एक उच्च स्थान प्रदान किया जाता था और स्वयंवर जैसी प्रथा भी थी; जिसमें उनको अपना वर चुनने की खुली छूट थी। आज भी हम इतिहास से गार्गी, मीराबाई, लक्ष्मीबाई आदि का नाम सम्मान सहित लेते हैं। महिलाओं के बिना समाज अधूरा है क्योंकि वह समाज की मूल इकाई और नींव है। उसी नींव पर एक उज्ज्वल समाज का निर्माण होता है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है कि सम्पूर्ण मानव जाति और समाज का भी सशक्तिकरण है।

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकताः हमारा समाज एक पुरुष प्रधान समाज है जहाँ हर क्षेत्र में पुरुषों का बोल-बाला है और वह, महिलाओं का कार्यक्षेत्र सिर्फ घर तक ही सीमित कर देते हैं। महिलाएँ समाज का आधा भाग हैं, अतः उनके बिना समाज का पूर्ण विकास संभव नहीं है। एक प्रसिद्ध कहावत है कि, "यदि आप एक महिला को सशक्त करते हैं, तो एक पूरे समाज को सशक्त करके उन्नत और आधुनिक समाज बनाते हैं।" देश के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए महिला सशक्तिकरण अनिवार्य है। महिलाएँ, एक सुदृढ़ समाज की बुनियादी बातों को भली भांति जानती है और अपनी भूमिका को विनम्रता से निभाती है। पिछले कुछ वर्षों में हमारी सरकार द्वारा महिलाओं के विरुद्ध भेदभाव और लैंगिक मतभेद को समाप्त करने के लिए कई कानूनी अधिकारों और संवैधानिक प्रावधानों को लागू किया गया है, जिससे महिला सशक्तिकरण की भावना को सही मायनों में अवधारित किया जा सके। परन्तु इतनी बड़ी सामाजिक बाधा को दूर करने के लिए सभी के मिल-जुल कर प्रयास करने की आवश्यकता है, क्योंकि कानून मात्र बना देने से समस्या का समाधान नहीं होगा अपितु इसके हेतु मानसिक विचार धारा को ही बदलना होगा।

महिला सशक्तिकरण की समस्याः पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं पर अत्याचार और उत्पीड़न की घटनाओं में काफी वृद्धि हो गई है। इसका मुख्य कारण है उन्मुक्त वातावरण, मोबाईल उपयोग की वृद्धि, अनुचित कार्य व्यवस्था, शराब और ड्रग्स आदि की अधिक खपत। इसके लिए प्रभावी पुलिस सेवा की व्यवस्था, सुरक्षित शौचालय, हेल्पलाईन नंबरो की वृद्धि, नैतिक शिक्षा की जरूरत और मोबाईल के दुरुपयोग रोकने की आवश्यकता है। महिलाओं को अधिक से अधिक आत्मरक्षा प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए और प्रभावी रक्षा तकनीकों का ज्ञान अर्जित करना चाहिए। महिलाओं को इंटरनेट पर किसी भी अनजान व्यक्ति के साथ संवाद करते समय पूरी सावधानी बरतनी चाहिए। महिलाओं के पास सभी आपात कालीन नंबर होने चाहिए ताकि वह किसी भी समस्या में तुरंत अपने परिवार और पुलिस से सम्पर्क कर सकें। महिलाओं को यात्रा पर जाते समय भी सावधानी रखनी चाहिए और विषम परिस्थिति में व्हाट्सएप का भी तुरंत प्रयोग करना चाहिए। आधुनिक समाज की महिला अधिकारों के प्रति जागरूकता और कई गैर-सरकारी संगठनों की महिला सशक्तिकरण में सक्रियता, इस समस्या के कारगर समाधान में स्थायी हल प्रदान करेंगे।

उपसंहारः महिलाओं में धैर्य धारण करने की अद्भुत शक्ति और क्षमता होती है। आज के जगत में सभी क्षेत्रों में नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। अपने साहस, परिश्रम और बुद्धिमता के आधार पर विश्व पटल पर अपने पहचान बनाई है। मानवीय संवेदना, वात्सल्य, करुणा एवं दूरदर्शिता जैसे भावों से परिपूर्ण अनेक महिलाओं ने युग निर्माण में अपना विशिष्ट योगदान दिया है। महिलाएं हमारे समाज में विभिन्न प्रकार की महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाती हैं। भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण को प्रभावी बनाने के लिए समाज की मानसिकता और महिलाओं के प्रति कुप्रथाओं को बदलना होगा। इसे खुले दिमाग से, संवैधानिक और अन्य कानूनी प्रावधानों के साथ लागू करने की आवश्यकता है। इन सभी का महिला सशक्तिकरण में योगदान है तभी तो हमारा समाज सुशिक्षित, सुसंस्कृत और सुविचार युक्त हो सकेगा।

किरण तलवार
पत्नी – श्री राजीव तलवार,
सहायक महाप्रबंधक, अनुगुळ

समय प्रबंधन

"समय और ज्वार किसी का इंतजार नहीं करते"

कभी कभी ऐसा लगता है कि, ऐसी कहावतों का आजकल के पेशेवर जीवन में कोई मान्य स्थान नहीं है। वे केवल सिलेबस के हिस्से के रूप में रह गए हैं, जिसे बच्चे रट्टा लगा के फिर भूल जाते हैं । समय की पाबंदी, बचपन में हमारे लिए एक मूल्यबोध थी, लगता है आज उसका कोई मूल्य नहीं है। आज की व्यावसायिक दुनिया में, देर से आने का मतलब है केवल वेतन में कटौती। देर से आना कोई बुरी आदत नहीं है। हम अक्सर इसे 'भारतीय मानक समय' के रूप में बताते हैं। टाइम मैनेजमेंट एक अस्पष्ट अवधारणा बन गयी है। आज के पेशेवर जीवन में, कार्यशील होने का मतलब है ओवरटाइम करना या फिर कार्य समय के बाद भी काम करते रहना है। कार्य-जीवन संतुलन यहाँ एक मिथक है और अक्सर इसे एक दोष या अवगुण माना जाता है।

हालांकि सभी प्राकृतिक संसाधनों के पुन: उपयोग और पुनर्चक्रण के लिए प्रयास किए जा रहे हैं, लेकिन दो सबसे महत्वपूर्ण संसाधनों पर इसे लागू करने की पुरजोर आवश्यकता है, जो अकसर उनके सार स्वरूप के कारण अनदेखा हो जाते हैं। ये दो संसाधन हैं : मानव संसाधन और समय। आर्थिक लाभप्रदता और संसाधन उत्पादकता के माध्यम से विकास प्राप्त करने की प्रक्रिया में, मानव संसाधन अत्यधिक उपयोग का शिकार होकर मानसिक रूप से धीरे-धीरे बिखरता जाता है । इससे इस महत्वपूर्ण संसाधन की उत्पादकता कम हो जाती है। एक अन्य संसाधन जिसे हम अक्सर तेजी से आगे की वृद्धि दर प्राप्त करते समय भूल जाते हैं, वह है 'समय'। समय एक ऐसा संसाधन है, जिसका न तो पुन: उपयोग किया जा सकता है, न ही पुनर्नवीनीकरण या फिर से बनाया जा सकता है। यह केवल प्रबंधित किया जा सकता है।

२४ घंटे, १४४० मिनट, ८६,४०० सेकंड - और हमारी घड़ी के प्रत्येक सेकंड का अपना मूल्य है। यदि हम इतिहास में पीछे देखें, तो लंबे समय तक कार्य अवधि हेतु उपजी समस्या का मुकाबला करने के लिए और एक कार्य-जीवन संतुलन सुनिश्चित करने के लिए ८-घंटे का कार्य दिवस प्रस्तुत किया गया था। रॉबर्ट ओवेन ने लोगों को प्रतिदिन ८ घंटे से अधिक काम न करने के लिए एक अभियान शुरू किया था। उनका नारा था "आठ घंटे श्रम, आठ घंटे मनोरंजन, आठ घंटे आराम।" यह एक १८वीं शताब्दी की अवधारणा थी, जिसमें एक पेशेवर की आर्थिक, मनोवैज्ञानिक और शारीरिक स्वास्थ्य का ख्याल रखा गया था। इसने अब 'टाइम मैनेजमेंट' नामक अवधारणा को रास्ता दिया है। समय में परिवर्तन के साथ, प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ, मानव मस्तिष्क में विकास के साथ और प्रत्येक मनुष्य को होशियार होने के साथ, अब इस अवधारणा को भी पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। अब विशेषज्ञों की राय है: "हम कितने समय तक काम करते हैं यह महत्वपूर्ण नहीं है।" काम की मात्रा धीरे-धीरे काम की गुणवत्ता से बदल रही है। लेकिन, हम अभी भी पिछड़ रहे हैं। हमें टाइम मैनेजमेंट में स्कोर करना बाकी है। ऊर्जा प्रबंधन अभी भी एक दूर का सपना लगता है।

ऐसे कई लोग हैं जो सिर्फ खुद को वर्कहॉलिक के रूप में पेश करने की कोशिश करते हैं और कुछ लोग डर के इस रास्ते पर चलते रहते हैं। नियमित काम आपातकाल में बदल गया है। धीरे-धीरे, संकट और आपातकाल की शर्तें पेशेवर सेट-अप में अपनी साख खो रही हैं। लेकिन नई पीढ़ी आगे आ सकती है और इसे चुनौती के रूप में ले सकती है। मानव संसाधन पर अनावश्यक रूप से अत्यधिक काम करने वाली चुनौती है। निर्धारित कार्य-दिवस के बाद व्यक्ति विशेष द्वारा अपने जीवन और व्यक्तिगत स्थान का आनंद लेना कोई अपराध नहीं है। हमारी असमर्थता और समय के प्रबंधन में अक्षमता के कारण ८-घंटे के कार्य दिवस को बढ़ाने की आवश्यकता नहीं है। आइए बिना किसी कारण के हमारे हर सामान्य दिन को संकट-दिवस न बनाएं और स्व-निर्मित संकट के समाधान के लिए अतिरिक्त समय व्यतीत करें। आइए हम सभी अपने कार्य-जीवन को कुशल बनाने के लिए और अपने जीवन को सुखद, शांतिपूर्ण और संतुष्ट बनाने के लिए स्मार्ट बनें। आओ हम दुनिया के साथ चलते हैं और टाइम मैनेजमेंट से आगे बढ़कर एनर्जी मैनेजमेंट की ओर बढ़ते हैं।

धरित्री शतपथी
उप-प्रबंधक (निगम संचार)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

मुसीबतों के आगे जिंदगी और भी है

मुसीबतें हमारी ज़िंदगी की एक सच्चाई हैं। कोई इस बात को समझ लेता है, तो कोई पूरी ज़िंदगी इसका रोना रोता है। ज़िंदगी के हर मोड़ पर हमारा सामना मुसीबतों से होता है। इसके बिना ज़िंदगी की कल्पना नहीं की जा सकती है।

अक्सर हमारे सामने मुसीबतें आती है तो हम उनके सामने हार मान जाते हैं। उस समय हमें कुछ समझ नहीं आता की क्या सही है और क्या गलत? हर व्यक्ति का परिस्थितियों को देखने का नज़रिया अलग होता है। कई बार हमारी ज़िंदगी में मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है। उस कठिन समय में कुछ लोग टूट जाते हैं तो कुछ संभाल जाते हैं। जिसमें परिवार एक मुख्य भूमिका अदा करता है।

इंसान हमेशा किसी भी मुसीबत (Problem) को दो तरीकों से देखता है:

1 मुसीबत पर ध्यान केंद्रित करके

2 समाधान पर ध्यान केंद्रित करके

समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने वाले अक्सर मुसीबतों में ढ़ेर हो जाते हैं। इस तरह के इंसान किसी भी मुसीबत में उसके हल के बजाए उस मुसीबत के बारे में ज्यादा सोचते हैं। वहीं दूसरी ओर समाधान पर ध्यान केंद्रित करने वाले लोग मुसीबतों में उसके हल के बारे में ज्यादा सोचते हैं। इस तरह के इंसान मुसीबतों का डट के सामना करते हैं।

आज मैं आपको एक महान 'समाधान केंद्रित' इंसान की कहानी बताने जा रही हूँ जो आपको किसी भी मुसीबत से लड़ने के लिए प्रोत्साहित करेगी। आपने नेपोलियन बोनापार्ट का नाम तो सुना ही होगा। जी हाँ वही नेपोलियन बोनापार्ट जो फ्रांस के एक महान निडर और साहसी शासक थे, जिनके जीवन मे असंभव नाम का कोई शब्द नहीं था। इतिहास में नेपोलियन को विश्व के सबसे महान और अजय सेनापतियों में से एक गिना जाता है। वह इतिहास के सबसे महान विजेताओं में से माने जाते थे । उसके सामने कोई टिक नहीं पाता था।

नेपोलियन अक्सर जोखिम भरे काम किया करते थे। एक बार उन्होंने एल्पस पर्वत को पार करने का ऐलान किया और अपनी सेना के साथ चल पड़े। सामने एक विशाल और गगनचुम्बी पहाड़ खड़ा था जिसपर चढ़ाई कर पाना असंभव था। उसकी सेना में अचानक हलचल की स्थिति पैदा हो गई। फिर भी उसने अपनी सेना को चढ़ाई का आदेश दिया। पास में ही एक बुजुर्ग औरत खड़ी थी। उसने जैसे ही यह सुना वो उसके पास आकर बोली कि क्यों मरना चाहते हो? यहाँ जितने भी लोग आये है वे मूँह की खाकर गये हैं।

अगर अपनी ज़िंदगी से प्यार है तो वापस चले जाओ। उस औरत की यह बात सुनकर नेपोलियन नाराज़ होने के बजाए प्रेरित हो गया और झट से हीरों का हार उतारकर उस बुजुर्ग महिला को पहना दिया और फिर बोले; आपने मेरा उत्साह दोगुना कर दिया और मुझे प्रेरित किया है। लेकिन अगर मैं जिंदा बचा तो आप मेरी जय-जयकार करना।

उस औरत ने नेपोलियन की बात सुनकर कहा- तुम पहले इंसान हो जो मेरी बात सुनकर हताश और निराश नहीं हुए। ' जो करने या मरने ' और मुसीबतों का सामना करने का इरादा रखते हैं, वह लोग कभी नहीं हारते।

आज सचिन तेंदुलकर को इसलिए क्रिकेट का भगवान कहा जाता है क्योंकि उन्होंने जरूरत के समय ही अपना शानदार खेल दिखाया और भारतीय टीम को मुसीबतों से उबारा। ऐसा नहीं है कि यह मुसीबतें हम जैसे लोगों के सामने ही आती हैं, भगवान राम के सामने भी मुसीबतें आयी हैं। उन्होंने सभी मुसीबतों का सामना आदर्श तरीके से किया। तभी वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए जाते हैं। मुसीबतें ही हमें आदर्श बनाती हैं।

अंत में एक बात हमेशा याद रखिये;

"जिंदगी में मुसीबतें चाय के कप में जमी मलाई की तरह है, और कामयाब वे लोग हैं जिन्हें फूँक मार कर मलाई को एक तरफ कर चाय पीना आता है।"

क्यों कि – "नामुमकिन कुछ भी नहीं"

प्रिया चिंनारॉय
प्रशासन विभाग
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

गांधीगिरी

गांधीवाद विचारों का एक निकाय है जो मोहनदास करमचन्द गांधीजी की प्रेरणा और जीवन कार्य का वर्णन करता है। यह विशेष रूप से अहिंसक प्रतिरोध के विचार में उनके योगदान से जुड़ा है। गांधीवाद के दो स्तंभ हैं, सत्य और अहिंसा। गांधीवादी धर्म केवल हिंदूओं के लिए नहीं, केवल भारत के लिए नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लिए है। गांधीवादी दर्शन न केवल भारतीय राष्ट्र के पुनर्जन्म के लिए आवश्यक है, बल्कि मानव जाति की पुन: शिक्षा के लिए भी आवश्यक है। आत्म-अनुशासन, आत्म-संयम और आत्म-विकास के गुण जो कि भारतीय धर्म और गांधीवादी संस्कृति के मुख्य आधार हैं, आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने कई साल पहले थे। इसलिए हम सभी को गांधीवादी धर्म के संरक्षण के लिए आगे आना चाहिए। वास्तव में, गांधीजी एक महान आत्मा थे, जिन्होंने सभी धर्मों तथा मानवता की मूल एकता का प्रचार किया था।

सम्मान, समझ, स्वीकृति, प्रशंसा व करुणा महात्मा गांधीजी के अहिंसा के पांच महत्वपूर्ण प्रेरक एवं इसके अस्तित्व के मूलभूत तत्व हैं। यह सभी सरल आदतें हैं। यदि हम सभी इनका पालन करने की कोशिश करने लगें, तो हम दुनिया में एक अतुलनीय बदलाव ला सकते हैं। इन आदतों को अपनाने से हम न केवल खुद खुश रह सकते हैं बल्कि दूसरों को भी खुश कर सकते हैं। अहिंसा की शक्ति में महात्मा के विश्वास को उनके इस उद्धरण से परिलक्षित किया जा सकता है, "अहिंसा मेरे विश्वास का पहला लेख है। यह मेरे पंथ का अंतिम लेख भी है।"

समकालीन समाज के लिए, सत्यता के आदर्शों का पालन करना एक महत्वपूर्ण चुनौती है। यहाँ सत्यता की शक्ति पर महात्मा के नुस्खे से हमें यह पता चलता है कि हमें किस मार्ग पर चलना है। सत्य के सार पर, गांधीजी ने कहा था, "कई गुणा प्रसार से भी कोई गलती अथवा त्रुटि सत्य नहीं बन जाती है और इसी प्रकार सत्य भी त्रुटि अथवा असत्य नहीं बन सकता है क्योंकि सभी इसे देखते हैं। सच अटल रहता है, चाहे इसे कोई जन समर्थन भी न हो। यह आत्मनिर्भर है।" यह हम सभी के लिए एक सत्य अनुस्मारक है कि हम हर तरह से सच्चाई से खड़े हों।

महात्मा गांधीजी से हम सबसे बड़ा सबक यह सीखते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति की अच्छाई में उनकी गहरी आस्था थी और उनका यह विश्वास था कि मानवता कल्याण की ओर अग्रसर है। मानवता के प्रति उनका दृढ़ विश्वास था, और उनका मानना था कि, "आपको मानवता में विश्वास नहीं खोना चाहिए। मानवता एक महासागर है; अगर समुद्र की कुछ बूंदें गंदी हैं, तो इससे पूरा समुद्र गंदा नहीं होता है।"

जैसे-जैसे दुनिया प्रकृति और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से जूझ रही है, यह समय इंसानों के लिए गांधीजी के ब्रह्मांड संबंधी दृष्टिकोण पर फिर से विचार करने का है। गांधीजी के लिए, हम इंसान ब्रह्मांड के सभी पहलुओं से जुड़े हुए हैं और अलगाव में नहीं रह सकते। उन्होंने इस बात पर बल दिया था कि सभी जीव पवित्र है तथा लालच को कम करने पर बल दिया जाए। उन्होंने ठीक ही कहा था, "पृथ्वी, वायु, भूमि और जल हमारे पूर्वजों की विरासत नहीं हैं, बल्कि यह हमारे बच्चों का ऋण है। इसलिए हमें इनका कम से कम उपयोग करके अपने आने वाली पीढ़ी को उसी प्रकार सौंपना चाहिए जिस प्रकार यह हमें विरासत में प्राप्त हुए हैं।"

गांधीजी के सिद्धांतों से हमें अहिंसा, स्वदेशी उपयोग, धार्मिक/भगवान संबंधी, शिक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य, आर्थिक तथा अन्य कई विषयों पर मार्गदर्शन मिलता है।

वर्तमान युग में यह सोचने का विषय है कि क्या हम गांधीजी के आदर्शों एवं विचारों पर चलने की क्षमता रखते हैं? क्या हम उनके सभी सिद्धांतों को अपना सकते हैं? यह हम सभी के लिए विचार करने योग्य प्रश्न है। उनके आदर्शों का अभी तक पूर्णतः उपयोग ही नहीं किया गया है। आदर्शवादी गांधीजी के विचार बहुत ही दूरदर्शी थे और अपने समय से बहुत आगे के समय की सोच रखते थे, जिन्हें युवा पीढ़ी द्वारा पूरी तरह से समझा नहीं गया है। गांधीजी के विचारों को हमारे युवाओं में प्रसारित करने की आवश्यकता है। यह वे विचार हैं जो मानव समाज को इच्छित लक्ष्य की ओर अग्रसर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

भागवतुला रमेश
प्रबंधक (परियोजनाएँ)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

स्वस्थ शरीर-सुखी परिवार

इस ब्रह्माण्ड में संभवतः हमारी पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है जहाँ पर जीवन उपस्थित है। इस पृथ्वी पर मनुष्यों को छोड़कर समस्त जीव अपना जीवन प्राकृतिक तरीके से व्यतीत करते है। मनुष्यों ने अपने बौद्धिक क्षमता का उपयोग करके अपने लिए बहुत सारी सुख सुविधाओं का विकास कर लिया है। मनुष्य को इन आधुनिक सुख सुविधाओं का उपयोग करने का इतना अभ्यास हो गया है कि उसे अपने स्वास्थ्य का ध्यान ही नहीं रहा। आजकल भागम-भाग की जिंदगी में मनुष्य को खुद के स्वास्थ्य के लिए थोड़ा समय अवश्य निकलना चाहिए , क्योंकि कहते हैं कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।

अर्थात स्वास्थ्य को सबसे बड़ा धन माना गया है। यदि धन दौलत हाथ से निकल जाये तो उसे पुनः प्राप्त किया जा सकता है। परन्तु एक बार स्वास्थ्य बिगड़ जाये तो उसे पुरानी स्थिति में लाना बहुत कठिन होता है। इसलिए समझदार लोग अपने स्वास्थ्य की हिफाजत मनोयोग-पूर्वक करते हैं। आपका अच्छा स्वास्थ्य आपके और आपके परिवार में अत्यंत खुशियों का कारण होता है, और हमारे आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरित करता है। अच्छे स्वास्थ्य में एक तरह का सौंदर्य होता है। जो व्यक्ति अच्छे स्वास्थ्य से युक्त होते हैं, उनके मन में उत्साह और उमंग होता है। अर्थात हमारे समाज के लोग स्वस्थ रहकर और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहेंगे तो हमारा देश उन्नति करेगा। अतः प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह स्वास्थ्यप्रद जीवनशैली अपनाए और अपने तन को स्वस्थ और मन को आनंदित रखे ताकि हमारा देश तेजी से विकाश करें।

स्वास्थ्य को बनाये रखने के में नियमित दिनचर्या का बहुत महत्व होता है। यह व्यक्ति को तनाव से दूर रखता है। क्योंकि हमारा शरीर मशीन की भाँति कार्य करता है तो जिस प्रकार मशीन की समय-२ पर देखभाल की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मनुष्य को भी समय-२ पर स्वास्थ्य की देखभाल करनी चाहिए।

जो व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं है , वह अपने परिवार की देखभाल नहीं कर सकता है। इसी तरह कोई व्यक्ति मानसिक तनाव का अनुभव कर रहा है तो वह भी अपने परिवार को सुखी रखने में असमर्थ होता है। स्वास्थ्य केवल आपके खाने के बारे में ही नहीं है, बल्कि यह इस बारे में भी है कि आप क्या सोच रहे हैं और क्या कर रहे हैं। आम तौर पर किसी व्यक्ति को स्वस्थ तब कहा जाता है जब वह मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ हो और अच्छे स्वास्थ्य का आनंद ले सके। आज किसी व्यक्ति को स्वस्थ तब माना जाता है, यदि वह अच्छे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और संज्ञानात्मक स्वास्थ्य का आनंद ले रहा है।

हमें अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि कहते हैं ना कि, धन गया तो कुछ नहीं गया स्वास्थ्य गया तो बहुत कुछ गया और यदि चरित्र गया तो सब कुछ गया। हमें अपने स्वास्थ्य की देखभाल करने के लिए एक संतुलित दिनचर्या का पालन करना चाहिए। हमें नियमित रूप से पौष्टिक आहार का सेवन करना चाहिए। हमें प्रतिदिन व्यायाम, योग इत्यादि करना चाहिए जिससे हमें सकारात्मक शारीरिक और मानसिक शक्ति के संचरण का अनुभव होता है और हमारे स्वास्थ्य के लिए सुबह की ताजी हवा भी बहुत फायदेमंद होती है , क्योंकि सुबह की हवा में कम प्रदूषण और अधिक मात्रा में ऑक्सीजन होती है और ऑक्सीजन हमारे मस्तिष्क के लिए बहुत ही अच्छा आहार होता है। अच्छी मात्रा में ऑक्सीजन मिलने से हमें मानसिक रूप से शांति का अनुभव होता है। हमें प्रोटीन, विटामिन युक्त भोज्य पदार्थों का सेवन अधिक करना चाहिए और वसा युक्त भोज्य पदार्थों का परहेज करना चाहिए। हमें अपने आपको स्वस्थ रखने के लिए उचित मात्रा में आराम की भी आवश्यकता होती है , इसीलिए हमें प्रतिदिन कम से कम ६ घंटे सोना चाहिए। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हमें कभी-२ खेलना भी चाहिए , खेल के माध्यम से शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से चुस्ती और तंदुरुस्ती का आभास होता है। हमें एक संतुलित दिनचर्या का पालन करते हुए प्रतिदिन व्यायाम और योग करते हुए पौष्टिक आहार का सेवन करना चाहिए जिससे हम मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रह सकेंगे।

रोशनी कुमारी
पत्नी- श्री चंद्र शेखर सोनी, सहायक प्रबंधक (सिस्टम्स),
एलुमिना रिफाइनरी, दामनजोड़ी

वृक्षारोपण
"वृक्षारोपण से ही पृथ्वी पर सुखचैन है वृक्ष लगाना जीवन का एक महत्वपूर्ण संदेश है."

वृक्षरोपण को प्रकृति का अनमोल उपहार माना जाता है, क्योंकि वृक्षों का हमारे जीवन में बहुत ही योगदान रहा है। वृक्ष एक सच्चे योद्धा है जो जन्म से ही स्वच्छ व सुंदर पर्यावरण देते हैं ।इसलिए धरती को हरा भरा रखने के लिए हमें संकल्प लेना है और साल में दो पेड़ लगाना है। वृक्ष अधिक लगाने से हमें कई लाभ मिलते हैं। वृक्षों के कारण जीवन भर हमें खाने के लिए फल, अनाज, जल, लकड़ी, कागज, रबर आदि मिलती है । वृक्षों के पत्तों द्वारा भूमि होती है, वृक्षों के सहारे ही जीव जंतुओं के रहने के लिए घर बनाए जाते हैं । इसलिए हमें अधिक से अधिक वृक्ष लगाने होंगे, जिससे हमारा आने वाला भविष्य सुरक्षित और स्वच्छ हो । जहाँ पर वृक्ष अधिक मात्रा में होते हैं वहां की जलवायु स्वच्छ और सुंदर होती है । हमारे भारत देश में तो पेड़ों की पूजा की जाती है उनको उतना ही मान सम्मान दिया जाता है जितना कि किसी मनुष्य को दिया जाता है । यह देखा गया है कि जिस क्षेत्र में वृक्ष अधिक होते हैं वहां बरसात भी अधिक होती है और जिस क्षेत्र में बरसात कम होती है वहां वृक्ष भी कम मात्रा में होते हैं, इसका सीधा असर हमारी फसलों पर पड़ता है।

सबसे बड़ी बात यह भी है कि पृथ्वी को हरियाली बनाए रखने के लिए अधिक मात्रा में वृक्ष लगाना आवश्यक है। साथ ही साथ पेड़ पौधे को अधिक मात्रा में लगाने से कई तरह के प्रदूषण को भी कम किया जा सकता है।

जब तक पृथ्वी पर वृक्षों का अस्तित्व रहेगा तब तक मानव सभ्यता का अस्तित्व भी होगा, इसलिए हमें वृक्षों की सुरक्षा करनी चाहिए ।इस तरह, मनुष्य जन्म लेने के बाद से मृत्यु तक वृक्षों एवं उनसे प्राप्त होने वाले विभिन्न प्रकार की वस्तुओं पर निर्भर रहता है । हमारे भारत में वृक्षारोपण से प्रकृति का संतुलन बना रहता है. वृक्ष अगर ना हो तो बारिश नहीं होगी, बारिश अगर ना हो तो नदियों में ना जल भरी रहेगी और ना ही धरती पर मानव समाज का सांस्कृतिक जीवन रहेगा . वृक्षारोपण के कार्यक्रमों को प्रोत्साहन देने के लिए लोगों को वृक्षों से होने वाले लाभ के बारे में अवगत कराना होगा । कुछ संस्थाएं तो वृक्षों को गोद लेने की परंपरा भी कायम कर रही है शिक्षा के पाठ्यक्रम में वृक्षारोपण को प्रमुख स्थान दिया जा रहा है। पेड़ लगाने वाले लोगों को प्रोत्साहित कराया जा रहा है। यदि हम चाहते हैं कि प्रदूषण कम हो एवं हम पर्यावरण की सुरक्षा के साथ सामंजस्य रखते हुए संतुलित विकास की ओर अग्रसर हो, तो इसके लिए हमें अनिवार्य रूप से वृक्षारोपण का सहारा लेना होगा। वृक्षारोपण से लाभ इस प्रकार हैं:

1) वृक्ष वातावरण को स्वच्छ एवं सुंदर बनाते हैं.
2) वृक्ष हमारे वातावरण से दूषित एवं जहरीली कार्बन डाइऑक्साइड एवं अन्य गैसों को अवशोषित करके हमें स्वच्छ ऑक्सीजन प्रदान करते हैं.
3) जहां अधिक मात्रा में वृक्ष होते है वहां ध्वनि प्रदूषण कम रहती है .
4) वृक्षों की सुखी पत्तियों से जैविक खाद मिलती है जो कि भूमि को उपजाऊ बनाती है. इसके कारण फसल अच्छी होती है.
5) वृक्षों से हमें फूल, फल, रबर, लाख, रेशम, कागज, दियासलाई, लकड़ी, जड़ी-बूटियां और अन्य खनिज पदार्थ प्राप्त होते हैं.
6) पेड़ों से प्रकृति में हरियाली रहती है और पूरे वातावरण में ठंडी शुद्ध हवा चलती है.
7) जीवों द्वारा छोड़े गए कार्बन डाइ-ऑक्साइड को ये जीवन दायिनी ऑक्सीजन में बदल देते हैं ।
8) इनकी पत्तियों, छालों एवं जड़ों से विभिन्न प्रकार की औषधियां तैयार की जाती है ।
9) वृक्ष की छाया द्वारा पशु-पक्षी ही नहीं, बल्कि मानव भी चैन की सांस लेते हैं| ।
10) जहां वृक्ष पर्याप्त मात्रा में होते हैं, वहां वर्षा की मात्रा अधिक होती है ।
11) वृक्षों से पर्यावरण की खूबसूरती में निखार आता है ।

12) वृक्षों से प्राप्त लकड़ियाँ भवन- निर्माण एवं फर्नीचर बनाने के काम आती है ।

देश में जहां वृक्षारोपण का कार्य होता है वहीं इन्हें पूजा भी की जाती है . कई ऐसे वृक्ष है, जिन्हें हमारे हिंदू धर्म में ईश्वर का निवास स्थान माना जाता है जैसे नीम, पीपल,आंवला, बरगद आदि. औषधीय गुणों का भंडार होते हैं जो हमारी सेहत को बरकरार रखने में मदद करते हैं। आदिकाल में वृक्ष से ही मनुष्य की भोजन की पूर्ति होती थी, वृक्ष के आसपास रहने से जीवन में मानसिक संतुलन मिलती है। वन तापमान को सामान्य बनाने में एवं भूमि को बंजर होने से रोकता है ।

लकड़ी, कागज, फर्नीचर, दवाईयां, सभी के लिए हम वनों पर ही निर्भर है । वन हमें दूषित वायु को ग्रहण करके शुद्ध एवं जीवन दायक वायु प्रदान करता है जितनी वायु और जल जरूरी है उतना ही आवश्यक वृक्ष होते हैं इसलिए वृक्षारोपण सभी जगह करना जरूरी है। भारत में वृक्षारोपण के लिए कई संस्थाएं हैं जैसे- पंचायती राज संस्थाएं, राज्य वन विभाग, पंजीकृत संस्था, कई समितियां वृक्षारोपण के कार्य कराती हैं ।

आज मानव अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए बेधड़क वृक्षों की कटाई कर रहा है। औद्योगिक प्रतिस्पर्धा और जनसंख्या के चलते वनों का क्षेत्रफल प्रतिदिन घटता जा रहा है । वृक्ष के कटने से पक्षियों का चहचहाना भी कम होता जा रहा है पक्षी प्राकृतिक संतुलन स्थिर रखने में प्रमुख कारक है परंतु वृक्षों की कटाई से तो वो भी अब कम ही दिखने लगे हैं अगर इसी तरह से वृक्ष की कटाई होती रही तो इसके अस्तित्व पर ही एक प्रश्न चिन्ह लग जाएगा। हमारी सरकार ने पेड़ों को बचाने के लिए कई वन रक्षकों की नियुक्ति की है लेकिन वे भी पेड़ों को काटने से बचाने में सहयोग नहीं कर पा रहे हैं. इसके कारण पृथ्वी का पूरा वातावरण प्रभावित हो रहा है अगर यूं ही चलता रहा तो आने वाले कुछ ही वर्षों में पीने के लिए जल की कमी और खाने के लिए खाद्य पदार्थ की कमी हो जाएगी साथ ही जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण स्वच्छ हवा की भी कमी हो जाएगी। इसलिए, हर नागरिक को अपने लिए और अपने राष्ट्र के लिए वृक्ष कटाई को रोकना है। आओ हम सब मिलकर आज से ही संकल्प लें कि सभी लोगों को जागरूक बनाकर और अभियान चलाकर अधिक मात्रा में पेड़ लगाएंगे।

कुंवर सिंह कोड़ाह
कनिष्ठ अधिकारी(राजभाषा), दामनजोड़ी

जल है तो कल है

चैन की नींद चाहिए,
तो हमें जागना होगा;
समय बहुत कम है,
अब हमें भागना होगा।
पृथ्वी की हालत,
लगातार बिगड़ रही;
जल की अल्पता,
दिन-ब-दिन बढ़ रही।

जल है जीवन की
अविरल अमृत धारा;
बिना इसके ज़रा सोचो,
क्या होगा हाल हमारा।
पेड़, पशु, पक्षी, मनुष्य,
सब की यही है पुकार;
जल ही जीवन है,
यही नारा है बार-बार।

हर तरफ से जल बचाओ,
किंचित मात्र भी व्यर्थ न गंवाओ;
यही समस्या का एकमात्र हल है,
क्योंकि जल है तो ही कल है।

अँशिता सिन्हा
सुपुत्री, श्री अंशुमान सिन्हा, प्रबंधक (ई एण्ड आई),
एवं श्रीमती अनीता पतंगिया

पाकिस्तान ख़बरदार !

जब 48 में तुमने, हम पर आँख उठाई थी,

तब सोमनाथ के फ़ौलाद ने, तुमको धूल चटाई थी।

फिर 65 में पैटन के दम पर, तुमने हम को ललकारा था,

तब तारापोर और हमीद ने मार तुम्हें, किया भारत माँ का जयकारा था।

बाज़ न आए तब भी तुम, 71 में सेबर जेट लाए थे,

झेल न पाए सेखों के तेवर, तुम फिर मुँह की खाए थे।

खेतरपाल और एक्का ने, औकात तुम्हारी दिखाई थी,

हथियार डाल अरोड़ा के कदमों में, दी नियाज़ी ने रहम की दुहाई थी।

भेष बदल कर 99 में तुमने, जिहाद का जामा पहना दिया,

अपने नापाक़ इरादों को, आज़ादी का रंग चढ़ा दिया।

सफ़ेद हिमालय को तुमने, लहू के रंग से जब रंगा था,

विक्रम, मनोज, संजय, योगेंद्र ने किया तुम्हें तब नंगा था।

लाल कर दिया है तुमने, लहू से श्रीनगर की घाटी को,

ये जुर्रत की छेड़ दिया, तुमने सोई हल्दीघाटी को।

ज़हर पिलाकर मज़हब का, इन कश्मीरी परवानों को,

आतंकी बनाकर भेज रहे, तुम इन भटके नादानों को।

खुले हथियार, खुला प्रशिक्षण, खुली हुई शैतानी है,

सारा विश्व जान चुका यह हरकत पाकिस्तानी है।

ऐटम बम की धमकी से न डरने वाले फ़ौलाद हैं हम,

सियार, भेड़ियों को उजाड़ दें ऐसी सिंह की औलाद हैं हम।

ख़बरदार जो तूने फिर छेड़ा, तेरे चेहरे का खोल बदल देंगे,

इतिहास की हस्ती ही क्या, तेरा पूरा भूगोल बदल देंगे।

मोड़ के हिमधारा को, गुज़ारेंगे लाहौर से गंगा,

इस्लामाबाद की छाती पर, शान से लहराएंगे तिरंगा।

अंशुमान सिन्हा
प्रबंधक (औ.अ)
प्रद्रावक, अनुगुळ

काले नाग की निष्पति

कल दोपहर, वर्षा हुई खूब
प्लावित हुई धरती
बगीचे में दिख पड़ा काले नाग का घर।
शाम चाय पीने के उपरांत
जब हम सब निकले बाहर-
"ओ माई गॉड" चिल्ला उठी मेरी सहेली।
घबराए हुए, हम सब हुए सतर्क, यह क्या?
दीवार से सटे हुए
लेटा हुआ था काला नाग
बड़े ही शान से, दृश्य यह देख मेरी बहन भागी
घर के अन्दर सोफे के कोने से, सिकुड़कर बैठी
सबके चेहरे पर था डर अथाह
जिसे देख सज्जन पड़ोसी न सुझाया-
चलो इसे डराएँ, लाओ डंडा
"आवाज करो ताकि भयभीत नाग निकल भागे.."
ऐलान कर डाला...
"स्नेक हेल्पलाइन को बुलाओ तो अच्छा होगा।"
इतने में मेरे पड़ोसी आए दौड़ते
अब बारी थी मेरी माँ की
लाई दूध एक कटोरे में-
"बारिश में भीगा हुआ, भूखा-प्यासा घर से बेघर
स्नेह से ओतप्रोत माँ
वो काला नाग, दूध ग्रहण करे।"
बस क्या था, यह सुनते ही दूसरे पड़ोसियों का हुआ आगमन...
आगमन शोर के साथ "जहरीला है, मार डालो!"
इस कोलाहल का हल कहाँ?
क्या करें काले नाग के साथ
क्या है उचित, क्या है न्याय
लेकिन काला नाग गया कहाँ
टार्च लिए सब लपके बगीचे की ओर
शान से काला नाग प्रवेश कर रहा था अपने बिल में...

सुजाता पाणि
अध्यक्ष, अंग्रेजी एवं ओड़िया विभाग
डी.पी.एस, दामनजोड़ी

मेरी पहली उड़ान

बंद मेरी मुट्ठी धीरे धीरे खुलने लगी,
गहरी नींद में सोई मेरी आशाएं,
धीरे धीरे जगने लगी।
अब उड़ने का जी करता है,
पंखो को फ़ैलाने का जी करता है।
पर मेरे छोटे से हृदय में,
एक डर भी घर करता है।
क्या मैं कभी ये उड़ान भर पाऊँगी,
अगर उड़ान भर भी ली,
तो क्या अपनी मंज़िल तक पहुँच पाऊँगी।
क्यों नहीं कर पाती हूँ मैं इन शंकाओं को परे,
बन जाते हैं ये मेरी कमज़ोरी
और रह जाते हैं मेरे सपने धरे के धरे।

पर अब बस, अब और नहीं,
दुनिया में बाधायें और उनके हल कहाँ नहीं।
जो इस बार फैलाएं हैं पर,
तो पीछे नहीं हटूंगी,
चाहे हो आकाश में कितने हो बाज़,
अपने रास्ते पर अडिग हो डटूंगी।
बस रखना होगा मुझे अपने ऊपर विश्वास
कि जो वो छिन गया,
तो कुछ न बचेगा मेरे पास
जो अब है ठाना,
तो करके कुछ दिखाऊंगी,
दुनिया के लिए नहीं,
अब खुद के लिए खुशियाँ जुटाऊंगी।

सर्जना सिंह
सहायक प्रबंधक (प्रद्रावक), अनुगुळ

पीपीएफ (सार्वजनिक भविष्य निधि) खाता

सभी नौकरीपेशा व्यक्तियों के साथ – साथ व्यवसायी, किसान, मजदूर दूसरे शब्दों में प्रत्येक नागरिक अपने भविष्य हेतु, जब वह अर्जन करने में सक्षम नहीं होगा, के लिए बचत करना चाहता है। भारत सरकार ने भी अपने नागरिकों के लिए ऐसी योजनाएं बनायी है, ताकि आयु हो जाने पर वह व्यक्ति अपना जीवन भली प्रकार से जी सके। इसे प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आयकर में इन योजनाओं में जमा राशि पर छूट दी जाती है। इसी प्रक्रिया में कर बचाने की कसरत में आपने पीपीएफ खाता का नाम जरूर सुना होगा। शायद आपसे लोगों ने कहा हो कि ये अच्छी बचत योजना है। लेकिन पीपीएफ खाते की कम जानकारी और झंझट की वजह से शायद आपने कोई गैर जरूरी जीवन बीमा योजना ले ली हो। कोई बात नहीं पीपीएफ योजना में आप कभी भी पैसा लगा सकते हैं।

पीपीएफ एक सीधी सादी और फायदेमंद स्कीम है। पीपीएफ खाता खुलवाने वाला कभी पछताता नहीं है। हां इसका प्रचार ज्यादा इसलिए नहीं होता है क्योंकि इस स्कीम में एजेंट को कमीशन नहीं मिलता है। तो आइए आपको पीपीएफ की पूरी जानकारी देते हैं।

पीपीएफ यानी सार्वजनिक भविष्य निधि (Public Provident Fund); भारत सरकार की ओर से अपने नागरिकों को उपलब्ध कराई गई ऐसी बचत योजना है, जो ट्रिपल ई श्रेणी (E-E-E : Exempt-Exempt-Exempt) में रखी जाती है। यानी कि इसमें जमा किए गए पैसे पर शुरुआत से लेकर अंत तक, आपको कहीं भी, कभी भी कोई कर अदा नहीं करना होगा।

1968 में भारत सरकार ने पीपीएफ निधि की स्थापना की थी। उद्देश्य यह था कि असंगठित क्षेत्र के जिन कर्मचारियों के लिए, कर्मचारी भविष्य निधि, पेंशन आदि की सुविधा नहीं है, उन्हे भी अपने भविष्य के लिए पैसा बचाने का मौका मिले। ज्यादा से ज्यादा लोग इस योजना को अपनाएं इसके लिए सरकार ने पीपीएफ को हर तरह के टैक्स से मुक्त रखा । इतना ही नहीं पीपीएफ जमा पर सेक्शन 80C के तहत टैक्स छूट भी दी जाती है। फिलहाल ये योजना काफी लोकप्रिय है। कर बचत और अच्छी व्याज दर की वजह से लोग इसे अपनाते हैं।

पीपीएफ अकाउंट के लिए जरूरी अर्हताएं व निवेश सीमा

पीपीएफ से जुड़ी सबसे अच्छी बात यह है कि इसे देश का कोई भी नागरिक खुलवा सकता है। चाहे आप नौकरीपेशा हों, व्यवसायी हो या किसान, आप इसमें अपना खाता खोल सकते हैं। यहां तक कि इसमें आयु सीमा का भी कोई बंधन नहीं है। आप अपने बच्चे या अवयस्क परिचित के लिए भी पीपीएफ खाता खुलवा सकते हैं।

यह ध्यान रखें कि आप अपने नाम सिर्फ एक पीपीएफ अकाउंट ही खुलवा सकते हैं। पहले से आपके नाम कोई पीपीएफ अकाउंट होने पर आप न तो अपने नाम और न ही किसी के साथ संयुक्त खाता खोल सकते हैं।

आप अपने जीवनकाल में कभी भी अपने नाम पर दूसरा अकाउंट नहीं खोल सकते। अगर कभी आपके नाम पर कभी कोई दूसरा पीपीएफ खाता पाया गया तो, फिर दूसरा अकाउंट तुरंत असक्रिय हो जाएगा। उस खाते में जमा राशि पर ब्याज भी नहीं मिलेगा।

न्यूनतम और अधिकतम निवेश

आप पीपीएफ में न्यूनतम 500 रुपए या अधिकतम डेढ़ लाख रुपए, एक वित्तीय वर्ष के दौरान, निवेश कर सकते हैं। अगर पीपीएफ किसी बच्चे या अवयस्क नागरिक के नाम पर खोला जा रहा है, तो भी उस अल्पवयस्क व्यक्ति और उसके अभिभावक के संयुक्त खाते में डेढ लाख रुपए से अधिक निवेश नहीं किया जा सकता। आप अपने पीपीएफ अकाउंट में साल भर में ज्यादा से ज्यादा 12 बार ही पैसा जमा कर सकते हैं। आप एक महीने में दो बार भी पीपीएफ अकाउंट में जमा कर सकते हैं, लेकिन साल भर में 12 बार से अधिक नहीं।

पीपीएफ नियमों में नए बदलाव के 6 फायदे

छोटी बचत के मामले में सार्वजनिक भविष्य निधि (पीपीएफ) सबसे अधिक फायदेमंद है। इसमें ऊंचे व्याज और टैक्स छूट का फायदा पहले से मिल रहा था। हाल ही में सरकार ने पीपीएफ के नियमों में कई तरह के बदलाव किए हैं। इसमें पहले के मुकाबले सस्ते कर्ज सहित कई फायदे जुड़ गए हैं।

1. **कर्ज एक फीसदी सस्ता मिलेगा -** नए नियमों के मुताबिक पीपीएफ के बदले कर्ज पर व्याज पीपीएफ के व्याज से सिर्फ एक फीसदी ऊंचा होगा जो अभी दो फीसदी है। उदाहरण के लिए यदि पीपीएफ पर व्याज दर अभी 7.90 फीसदी है तो अब उसके बदले कर्ज 8.90 फीसदी व्याज पर मिलेगा जबकि पहले यह 9.90 फीसदी व्याज दर पर मिल रहा था। पीपीएफ पर सबसे आसानी से कर्ज मिलता है और इसके लिए किसी गारंटी की जरूरत नहीं होती है। साथ ही अन्य सभी तरह के कर्ज के मुकाबले यह सस्ता भी होता है।

2. **दो साल पहले निकाल सकेंगे राशि -** सरकार ने पीपीएफ से समय पूर्व निकासी के नियमों में भी बदलाव किया है। इसके मुताबिक पीपीएफ से पांच साल बाद ही समय पूर्व निकासी (प्रीम्योच्योर) कर सकेंगे। सरकार ने इसमें यह स्पष्ट कर दिया है कि अवधि की गणना वित्तीय वर्ष के आधार की जाएगी। इसके मुताबिक जिस वित्तीय वर्ष में पीपीएफ खाता शुरू हुआ है उसमें पांच वित्तीय वर्ष के बाद निकासी संभव होगी। इसके पहले पीपीएफ खाते से सातवें साल ही राशि निकालने की अनुमति थी।

3. **बच्चों की शिक्षा के लिए निकासी की छूट -** पीपीएफ खाते को आकर्षक और सुविधाजनक बनाने के लिए सरकार ने समय पूर्व निकासी के नियमों में कुछ अन्य बदलाव भी किए हैं। पहले खाताधारक को अपनी शिक्षा के लिए पीपीएफ से समय पूर्व राशि निकालने की अनुमति थी, लेकिन अब पति-पत्नी या संतान की शिक्षा के लिए भी इसकी अनुमति दे दी गई है। पहले स्वयं पीपीएफ खाताधारक, या पति- पत्नी, संतान या आश्रित माता-पिता को गंभीर बीमारी हो जाने की स्थिति में भी पीपीएफ से समय पूर्व राशि निकालने की अनुमति थी, अब सरकार ने इसमें आवासीय बदलाव की वजह को भी अनुमति दे दी है।

4. **खाते की राशि हर हाल में मिलेगी -** पीपीएफ खाते की राशि खाताधारक, नॉमिनी या उसके कानूनी उत्तराधिकारी को हर हाल में मिलेगी। नए नियमों में स्पष्ट कर दिया गया है कि यदि खाताधारक ने नॉमिनी बनाया है तो उसकी मृत्यु के बाद नॉमिनी को राशि मिलेगी। यदि किसी को नॉमिनी नहीं बनाया है तो राशि उसके कानूनी उत्तराधिकारी को मिलेगी। इसके पहले खाताधारक की मृत्यु की स्थिति में नॉमिनी नहीं रहने पर पीपीएफ खाते की राशि को बिना दावे वाले सरकारी खाते में जमा कर दिया जाता था। अब ऐसा नहीं हो सकेगा। पीपीएफ में पहले इसमें संयुक्त खाता खोलने की भी अनुमति थी, लेकिन अब सिर्फ एक खाता खोल सकेंगे।

5. **डिफॉल्टर होने पर राशि जब्त नहीं -** सरकार ने छोटी बचत के साधन पीपीएफ को सुरक्षित बनाने के लिए एक और बड़ा बदलाव किया है। नए नियमों के तहत खाताधारक के डिफॉल्टर होने पर उसके पीपीएफ खाते की राशि को किसी भी स्थिति में जब्त या कुर्क नहीं किया जा सकेगा। इसके पहले बैंक या जांच एजेंसियां खाताधारक के डिफॉल्टर होने पर पीपीएफ खाते में जमा राशि को भी जब्त कर लेती थीं लेकिन अब ऐसा नहीं हो सकेगा।

पांच रुपये के अनुपात की बजाय अब 50 रुपये के अनुपात में जमा करने की सुविधा दी गई है। आप पीपीएफ में सिर्फ 500 रुपये से निवेश की शुरुआत कर सकते हैं। बैंक और डाकघर दोनों पीपीएफ खाता खोलते हैं। आप 100 रुपये में पीपीएफ खाता खोल सकते हैं। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि खाते में न्यूनतम राशि से कम होने पर बैंक और डाकघर शुल्क भी वसलूते हैं। तय राशि से कम रहने पर 50 रुपये सालाना शुल्क और उस साल का बकाया जमा करना पड़ता है। नौकरी करने वाले या स्वरोजगार करने वाले या कोई भी आम नागरिक पीपीएफ की सुविधा ले सकता है।

सारांशत: निवेश व्यक्ति को अपनी सुविधा तथा लक्ष्य के साथ सुनिश्चित करना चाहिए ताकि निकट भविष्य में होने वाले व्यय की पूर्ति सुनिश्चित की जा सके। उपलब्ध निवेश विकल्पों में पीपीएफ एक बेहतर विकल्प है। अत: मैं प्रत्येक व्यक्ति को पीपीएफ खाता खोलने का सुझाव अवश्य देना चाहूँगा।

प्रशांत कुमार महारणा
सहायक महाप्रबंधक (वित्त)
खान एवं परिशोधन संकुल, दामनजोड़ी

फूटा हुआ घड़ा

महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली अधिनायक अपने साथ और नीचे काम करने वाले योग्य कर्मचारियों से कभी भी संकट महसूस नहीं करते। वे उस कर्मचारी की योग्यता का सही उपयोग करके न उस कर्मचारी की व्यक्तिगत उन्नति में सहायक होते हैं, बल्कि कंपनी की उन्नति में उसकी योग्यता का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन जो अधिनायक अपने अयोग्य, निरुत्साहित कर्मचारी को भी बदल दे या उसकी कमजोरी को कंपनी की प्रगति के लिए इस्तेमाल करें वही महान और प्रभावशाली अधिनायक होता है। इसी से जुड़ी एक कहानी बताना चाहती हूँ- एक आदमी के घर में पानी की व्यवस्था नहीं थी। वह दूर नदी से पानी लाता था। उसने एक लकड़ी के डंडे के दोनों तरफ दो घड़े बाँध लिए। उसे कंधे पर रखकर वह पानी भरकर लाता था। कुछ दिनों बाद उसने देखा कि उसके एक घड़े में छेद हो गया है और जब तक वह घर पहुँचता था। उसका आधा घड़ा खाली हो जाता था। आधा पानी रास्ते में ही गिर जाता था। एक दिन टूटे हुए मटके को देखकर लोगों ने कहा कि तुम इसे फेंक दो। यह मटका अब किसी काम का नहीं है।

उस आदमी ने कहा कि इस मटके में दरार हो गयी है लेकिन मुझे मालूम है कि इस दरार का कैसे लाभ उठाया जा सकता है। जिस रास्ते से वह नदी तक और वापस घर आता था उस रास्ते में, और जिस तरफ टूटा मटका रहता था उस आदमी ने फूल के बीज डाल दिए। लौटते समय जब टूटे मटके से थोड़ा थोड़ा पानी पड़ा तो बीज फूट गये। पौधे निकल आए और नदी से घर तक का रास्ता फूलों से भर गया।

यही विशेषता है, एक योग्य और प्रभावशाली अधिनायक (leader) की। वह अपने हर कर्मचारी को महत्व देता है और उनकी खास काबिलीयत को पहचानकर उसको कंपनी की प्रगति के लिए उपयोग में लाता है।

निरूपमा शर्मा
सलाहकार (मासं)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

बेटियाँ

सूर्य की रोशनी है बेटियाँ
चाँद की शीतलता है बेटियाँ
जिन्दगी के गिटार की तार है बेटियाँ
अपने पापा की परी और माँ की छवि है बेटियाँ
अपने घर की शान और माँ-पापा का अभिमान है बेटियाँ
एक घर नहीं, दो घर की पहचान है बेटियाँ
बेटी से ही घर संसार है,
बेटी नहीं तो घर भी मकान है।
देवी की मूरत है बेटियाँ
माँ सरस्वती की सूरत है बेटियाँ
माँ लक्ष्मी की भक्ति है बेटियाँ
माँ दुर्गा की शक्ति है बेटियाँ।
एक भाग्य से बेटा जन्म लिया,
सौ भाग्य से बेटियाँ
एक वंश का अवतार है बेटा
दो वंशों की पहचान है बेटियाँ
इस संसार की जननी भी टूट गई
टूट गए पालनहार श्री कृष्ण भी
जब कलयुग में हुआ जन्म लाखों दुस्सासन का
अब द्रोपदी को खुद ही चंडी बनना होगा
बनना होगा दुर्गा, बनना होगा काली
लेकर रुद्र रूप, करना होगा संहार
दुस्सासन के दुःसाहस का
आओ मिल कर उन्हें सशक्त बनाएँ
तन से कोमल और मन से शीतल बेटी को
पूर्ण रूप से परिपक्व बनाएँ।

श्वेता रानी
कनिष्ठ प्रबंधक (विपणन)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

कलयुग का महामानव

जैसे जैसे घड़ी की सुईंयाँ 9 पर पहुंचती जाती थी रोजी की धड़कन बढ़ती जाती थी। अभिनव समय का बड़ा पाबंद था। उसके अनुशासन प्रिय होने के कारण ही वह बहुत कम समय में सफलता की उचाईयों तक पहुँच गया था।

"रोजी, नाश्ता तैयार है, लेट हो रहा हूँ" अभिनव ने कहा। "रोजी बोली हाँ, टेबल पर रखा है।"

अभिनव नाश्ता कर जैसे ही ऑफिस के लिए निकला, रोजी का साँस में साँस आयी। घर के सब कार्यों का दायित्व उसी के ऊपर था। इसी कारण वो जॉब भी नहीं कर पाई। अभिनव अच्छे पद पर था तथा वह घर में ज्यादा समय भी नहीं दे पाता था। रोजी घर को प्राथमिकता देती थी, इसी कारण ज्यादा शिक्षित होने के बावजूद वह नौकरी करने में ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखाई। रोजी ने आवाज लगाई "आशा, घर की सफाई अच्छे से करो, आज कल तुम्हारी छुट्टियाँ ज्यादा बढ़ गयी हैं।"

आशा- "मेमसाहब जरूरत पड़ने पर ही छुट्टी लेती हूँ।"

रोजी आशा की बात सुन कर चुपचाप रही क्योंकि उसे पता था कि नौकरानी से बिगड़ कर कोई लाभ नहीं होने वाला है। रोजी अपने नौकरों को प्रेमभाव के साथ रखती थी। यही बात अभिनव को खटकती थी। वह रोजी पर गुस्सा करता और कहता "सबको सर पर चढ़ाने की कोई जरूरत नहीं, जिसका जितना औकात है उसे वहीं तक रहने दो।"

अभिनव से सभी नौकर भय खाते पर रोजी के स्वभाव के कारण सभी घर में रहते थे। रोजी एक सरल, सहज व समझदार स्त्री थी। रोजी नित्य एक ही काम करके बोरे हो चुकी थी। उस दिन अभिनव के घर लौटते ही रोजी ने अभिनव को गर्मी की छुट्टियों में घूमने की बात कही। अभिनव भी रोजमर्रा के कार्यों से थक गया था और ऑफिस से छुट्टी पाकर घूमने जाने की तैयारी करने लगा। रोजी पैकिंग करने लगी।

सुबह-सुबह मंसूरी जाने के लिए अभिनव निकल पड़ा। अभिनव ने खुद ही ड्राईविंग करने की ठानी, उसे ड्राईविंग काफी पसंद था। बच्चे काफी खुश थे, दोनों मस्ती करने में लगे थे। रोजी बहुत खुश थी और उसने अभिनव को कहा "आज तुम्हारे चेहरे पर कितनी रौनक है, कहीं मेरी ही नजर न लग जाए।"

अभिनव मुस्कुराया और कहा "हाँ, आज इतने दिनों के बाद लॉग ड्राईविंग में काफी मजा आ रहा है।" तभी अचानक कार के सामने ट्रक आ जाती है, अभिनव विचलित हो उठा और स्टेयरिंग ज्यादा घूम जाने के कारण कार सड़क से उतरकर खाई में गिर जाती है।

पास के गाँव का ही एक आदमी देखकर पूरे गाँव वाले को इकट्ठा कर देता है। गाँव वालों ने अभिनव और उसके परिवार को सकुशल कार से बाहर निकाला। सभी को चोटें लगी थी। गाँव वाले सभी को उठाकर प्राथमिक चिकित्सा के लिए सरकारी अस्पताल में ले गए। गाँव के छोटे से अस्पताल में उनका इलाज करवाकर अपने घर में ले आए।

उन्हें गरम-गरम दूध दिया भोजन करवाया। गाँव वालों ने उनका खूब आदर –सत्कार किया। अभिनव और रोजी अभी भी सदमे में थे जैसे कोई दुःस्वपन देखा हो पर गाँव वालों की सहृदयता के कारण उन्हें हौंसला मिला। उनकी निःस्वार्थ भावना देखकर उन्हें लगा कि ये देवतुल्य हैं। शहरों में तो लोग हृदयविहीन हो गए हैं पर गाँव में ही "कलयुग के भगवान" बसते हैं जो स्वार्थ-रहित होकर आज भी एक दूसरे की मदद के लिए तत्पर रहते हैं।

अभिनव का हृदय परिवर्तित हो गया था। अब वह सभी लोगों का आदर सत्कार करता था। वह विनम्र हो गया था। उसके नौकर अब उससे भय नहीं खाते और उसे भीतर से आशीर्वाद देते।

अभिनव जल्द ही ठीक हो गया और अपने नित्य कर्मो में लग गया। वह अब सभी की मदद देने के लिए तत्पर रहता।

उस दिन अभिनव सुबह उठा और पेपर में पढ़ा कि "दिल्ली में कार एक्सीडेंट में एक ही परिवार के चार लोग मारे गए, कोई उन्हें अस्पताल नहीं ले गया।"

अभिनव इसी द्वंद में था कि शिक्षा और विज्ञान हमें किधर ले जा रही है क्या हम आज संवेदनहीन , हृदयहीन और भावनाविहीन नहीं होता जा रहे हैं। शिक्षा ने अवश्य आज मस्तिष्क का विकास किया हैं पर हृदय को संकुचित कर दिया है, जो हमारी मानवता के विनाश का संकेत है जो हमें आज सोचने को मजबूर करता है।

कामना सिंह
धर्मपत्नी-श्री अवधेश कुमार, स.म.प्र
विपणन, निगम कार्यालय

शिक्षा व संस्कार

"शिक्षा और संस्कार जहां, सद्भाव और प्यार जहां हाथ मिलेंगे दिल मिलेंगे, खुशियों का संसार वहां।"

संस्कार वह क्रिया है जिसके सम्पन्न होने पर कोई वस्तु किसी उद्देश्य के योग्य बनती है। शुद्धता, पवित्रता, धार्मिकता, एवं आस्तिकता संस्कार की प्रमुख विशेषताएँ हैं। ऐसी मान्यता है कि मनुष्य जन्मना असंस्कृत होता है किन्तु संस्कारों के माध्यम से वह सुसंस्कृत हो जाता है।

संस्कारों के माध्यम से मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण एवं विकास होता था। जीवन के प्रत्येक चरण में संस्कार मार्ग दर्शन का काम करते थे। उनकी व्यवस्था इस प्रकार की गयी थी कि वे जीवन के प्रारम्भ से ही व्यक्ति के चरित्र एवं आचरण पर अनुकूल प्रभाव डाल सकें। कहा जाता है शिक्षा जीवन का अनमोल उपहार है और संस्कार जीवन का सार है। इन दोनों के बिना धन-दौलत, जमीन-जायदाद, पद-प्रतिष्ठा और मान-मर्यादा सब बेकार हैं। शिक्षा व्यक्ति के जीवन को न केवल दिशा देती है वरन दशा भी बदल देती है।

आज ऐसा समय आ गया है कि जब तक दुनिया का, देश का, समाज का और घर-परिवार का प्रत्येक बच्चा शिक्षित नहीं किया जाएगा तो फिर हम उन्नत दुनिया, उन्नत देश की कल्पना तक भी नहीं कर पाएंगे। इसलिए आज समय बहुत तेजी से बदलता जा रहा है, नई-नई टेक्नोलॉजी विकसित हो रही है, शिक्षा के नए-नए साधन-आयाम विकसित और आविष्कृत हो रहे हैं, दुनिया सिकुड़ रही है, छोटी से छोटी घटना का पूरी दुनिया पर प्रभाव पड़ता है और इन प्रभावों को समझने के लिए, टेक्नोलॉजी को समझने के लिए, समय के साथ चलने के लिए अपनी संतान को अच्छी शिक्षा, सार्थक शिक्षा और व्यावहारिक शिक्षा से परिपूर्ण करना बहुत जरूरी है।

हमारी सबसे पहली जिम्मेदारी बनती है कि हर हाल में अपनी संतान को शिक्षित बनाएं ताकि वह परिवार-समाज और देश के विकास में अहम भागीदारी निभा सकें और राष्ट्र के अच्छे और जिम्मेदार नागरिक बन, अपना दायित्व बखूबी निभा सकें।

शिक्षा में ही संस्कार समाए हुए हैं क्योंकि भारतीय संस्कृति, भारतीय परम्पराएं, भारतीय जीवन मूल्य शिक्षा के आधार है। सनातन धर्म यही सिखाता आया है कि मानव-मानव में प्रेम हो, भाईचारा हो, एकता हो, सहयोग हो और एक दूसरे के सुख-दुःख में काम आएं। भारतीय संस्कृति की ही खास बात है कि उसमें सभी संस्कृतियां समा गई और उसने अपना वजूद बनाए रखा। संस्कार किसी पेड़ पर नहीं पनपते हैं, और न ही टपकते हैं, संस्कार तो घर-परिवार, समाज, शिक्षालयों और आसपास के परिवेश से सृजित होते हैं।

संस्कारों की सबसे अधिक जिम्मेदारी माता-पिता, परिजनों और शिक्षकों की होती है। यह भी सच है कि संस्कार मात्र कहने से, बोलने से नहीं आते हैं बल्कि ये तो व्यवहार से आते हैं, आचरण से आते हैं, सद्कर्म से आते हैं और चारित्रिक उज्ज्वलता से आते हैं। माता-पिता जैसा व्यवहार करेंगे, वैसा ही लगभग उनके बच्चे करते हैं। हमेशा याद रखें, आपकी हर हरकतों, कार्यो और व्यवहार का बारीक निरीक्षण आपके बच्चे कर रहे हैं।

रजनीश कुमार गुप्ता
प्रबंधक(यांत्रिकी)
ग्रहीत विद्युत संयंत्र,अनुगुळ

आओ तुम्हे हिंदी से मिलवाएँ

भारतवर्ष और विश्व की एक अनोखी भाषा हिंदी।

मानव सभ्यता की यह संपदा, सरल अभिव्यक्ति रहती सर्वदा।।

इस भाषा के अनुराग से, देश को मिलती उन्नत संस्कृति।

इससे श्रेष्ठ साहित्य और कविता रच कर, दिनकर-जयशंकर ने दी नयी आकृति।।

समय भागता है स्मरण में हर साल हिंदी दिवस मनाकर।

विफल पड़ जाती है, गर्भ-अतीत अंग्रेजी भाषा अपनाकर।।

आज हमें, सबसे मिलकर, राष्ट्र का गर्व-सम्मान लौटाना होगा।

समृद्धि और आधुनिकता की होड़ में, हिंदी नित्य प्रयोग लाना होगा।।

हिंदी भाषा स्मरण कर आज, हर मानस मधुसाला में रोता है।

अंग्रेजी सभ्यता में नौजवान भरक-विरल, असमंजसता में पड़ा जाता है।।

पर आज भी इस मिट्टी का सपूत जब स्वतंत्रता स्मरण करता है

वंदन कर भारत माँ का , हिंदी की आत्मकथा गाता है।।

आओ चलो सब मिलकर हिंदी का सम्मान करें, गुणगान करें।

इसे सशक्त बनाने का, अपना दृढ़ संकल्प करें।।

हिंदी की प्रगति और समृद्धि का विस्तार करें।

विश्व के हर जर्रे-जर्रे में, इस राष्ट्रभाषा का पाठ करें।।

हर दफ्तर, विद्यालय, कार्यालय में, सब कार्य करें हम हिंदी में।

समस्त विश्व में आज मान करें कि - हिंदी भारत की परिभाषा।।

प्रयास करें हर वर्ग-प्रांत, इस राष्ट्रभाषा को बचाने में।

हिंदी भाषा का विस्तार कर, राष्ट्र-प्रगति का प्रण लें।।

शुभाशीष पंडा
प्रबंधक (मा.सं.वि.),
विद्युत संकुल,अनुगुळ

हिन्दी की कथा

हिन्दी पखवाड़े में ही हिन्दी है, यही कथा है हिन्दी की

हिन्दी वाला अज्ञानी है,

अंग्रेजी वाला अभिमानी है, यही कथा है हिन्दी की,

थरूर कठिन अंग्रेजी बतियाता है, जनसाधारण को,

समझ नहीं आता है, पर वह ज्ञानी कहलाता है,

बाबू हिन्दी में बोल जाता है, जनसाधारण भी जान जाता है,

पर ज्ञानी नहीं कहलाता है।

चीन स्वभाषा अपनाता है,

विकासशील से विकसित की ओर त्वरित गति से जाता है।

हम पाश्चात्य भाषा के फेर में फँसे हैं,

धीरे-धीरे विकासशील से विकसित की ओर बढ़े हैं।

सवालिया हिन्दी का रोजगार है,

पर अंग्रेजी का कॉल-सेंटर का कारोबार है,

राजभाषा होकर भी हिन्दी की समृद्धि पर सवाल है!

यही सूरत-ए-खस्ता हाल है!

आओ उसे दुरुस्त बनाते हैं,

हिंदी संग सभी भारतीय भाषाओं का गौरव बढ़ाते हैं,

विदेशी धरती पर भारतीय भाषाओं का कॉल-सेंटर

स्थापित करवाते हैं।

अनुज कुमार
प्रबंधक (मानव संसाधन)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

जीवन एक अमूल्य रत्न

एक शहर में बहुत ही ज्ञानी प्रतापी साधु महाराज आये हुए थे। बहुत से दीन दुखी, परेशान लोग उनके पास उनकी कृपा दृष्टि पाने हेतु आने लगे। ऐसा ही एक दीन दुखी, गरीब आदमी उनके पास आया और साधु महाराज से बोला ' महाराज में बहुत ही गरीब हूँ, मेरे ऊपर कर्जा भी है, मैं बहुत ही परेशान हूँ। मुझ पर कुछ उपकार करें'।

साधु महाराज ने उसको एक चमकीला नीले रंग का पत्थर दिया, और कहा 'कि यह कीमती पत्थर है, जाओ जितनी कीमत लगवा सको लगवा लो'। वो आदमी वहां से चला गया और उसे बचने के इरादे से अपने जान पहचान वाले एक फल विक्रेता के पास गया और उस पत्थर को दिखाकर उसकी कीमत जाननी चाही।

फल विक्रेता बोला 'मुझे लगता है ये नीला शीशा है। महात्मा ने तुम्हें ऐसे ही दे दिया है, हाँ यह सुन्दर और चमकदार दिखता है, तुम मुझे दे दो, इसके मैं तुम्हें 1000 रुपए दे दूंगा।

वो आदमी निराश होकर अपने एक अन्य जान पहचान वाले के पास गया जो की एक बर्तनों का व्यापारी था। उनसे उस व्यापारी को भी वो पत्थर दिखाया और उसे बचने के लिए उसकी कीमत जाननी चाही। बर्तनो का व्यापारी बोला 'यह पत्थर कोई विशेष रत्न है में इसके तुम्हें 10,000 रुपए दे दूंगा। वह आदमी सोचने लगा की इसके कीमत और भी अधिक होगी और यह सोच वो वहां से चला आया।

उस आदमी ने इस पत्थर को अब एक सुनार को दिखाया, सुनार ने उस पत्थर को ध्यान से देखा और बोला ये काफी कीमती है। इसके मैं तुम्हें 1,00,000 रूपये दे दूंगा।

वो आदमी अब समझ गया था कि यह बहुत अमुल्य है। उसने सोचा क्यों न मैं इसे हीरे के व्यापारी को दिखाऊं, यह सोच वो शहर के सबसे बड़े हीरे के व्यापारी के पास गया। उस हीरे के व्यापारी ने जब वो पत्थर देखा तो देखता रह गया, चौकने वाले भाव उसके चेहरे पर दिखने लगे। उसने उस पत्थर को माथे से लगाया और और पुछा तुम यह कहा से लाये हो। यह तो अमुल्य है। यदि मैं अपनी पूरी सम्पति बेच दूँ तो भी इसकी कीमत नहीं चुका सकता।

कहानी से सीख:

हम अपने आप को कैसे आँकते हैं। क्या हम वो हैं जो राय दूसरे हमारे बारे में बनाते हैं। आपका जीवन अमूल्य है। आपके जीवन का कोई मोल नहीं लगा सकता। आप वो कर सकते हैं जो आप अपने बारे में सोचते हैं। कभी भी दूसरों के नकारात्मक टिप्पणी से अपने आप को कम मत आकियें।

सौरभ जेना
छायाकार, निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

क्वालिटी सर्किल की अवधारणा

क्वालिटी सर्किल एक ही कार्य क्षेत्र में, स्वेच्छा से गुणवत्ता नियंत्रण के कार्यों को करनेवाला एक छोटा समूह हे | यह छोटा समूह आत्मविकास और परस्पर विकास के लिए कार्यशाला में नियंत्रण और सुधार के लिए सभी सदस्यों की सहभागिता से और गुणवत्ता नियंत्रण तकनीकों का उपयोग करते हुए कंपनी स्तर पर गुणवत्ता नियंत्रण के एक भाग के रूप में लगातार कार्य करता है|

संशोधित: क्वालिटी सर्किल पहले स्तर के कर्मचारियों का एक छोटा समूह है, जिसके सदस्य अपने कार्य, उत्पाद और सेवाओं की गुणवत्ता का नियंत्रण करते हुए उसमें लगातार सुधार लाते हैं|

यह छोटे समूह: स्वायत रूप से कार्य करते हैं, गुणवत्ता नियंत्रण के सिद्धांत और तकनीकों तथा सुधार के लिए अन्य तकनीकों का उपयोग करते हैं, सदस्यों की रचनात्मक क्षमता को निखार कर आत्म विकास को बढ़ावा देते हैं|

क्यू. सी सर्किल के कार्यों का उद्धेश्य है: सदस्य की क्षमता को बढ़ावा देना, सदस्यों द्वारा कार्य में पहल करना, कार्यक्षेत्र को अधिक खुशहाल, सक्रिय और संतोषजनक बनाना, ग्राहकों में संतोष बढ़ाना और सामाजिक योगदान देना|

उच्च अधिकारी और प्रबंधक यह सुनिश्चित करते हैं कि: क्यू. सी सर्किल के कार्यकलाप के विकास में योगदान दें | क्यू. सी सर्किल के कार्यों को कर्मचारियों के विकास और कार्य क्षेत्र को सक्रिय बनाने का प्रमुख अंग मानें और प्रबंधक स्वयं कंपनी स्तर पर विकास के लिए संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन जैसे कार्य करें । सभी कर्मचारियों के मानवीय पक्ष का आदर करते हुए सभी की सहभागिता के लिए मार्गदर्शन करें और उसे समर्थन दें|

क्यू. सी सर्किल के मूल सिद्धांत हैं: मानवीय क्षमताओं को पूरी तरह निखारकर अन्ततः असीमित संभावनाओं को उद्घाटित करना | मानवीय पक्ष का आदर करते हुए कार्यक्षेत्र को खुशहाल, सक्रिय और संतोषप्रद बनाना, संस्था की प्रगति और विकास में योगदान देना है|

सुरजीत कर
उप-प्रबंधक (यांत्रिक)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

मेरे कविताओं के हमसफर

मेरे आसमान में तारे जितने
बारिशों के तराने में हैं बुंदे जितने
तुम्हारे साथ बिताये वक्त में थे लम्हें जितने
तुमसे जुड़े हैं मेरे पास यादें जितने
ऐ मेरे कविताओं के हमसफर
इस दिल में आज....
है दरारे जितने
इन्हीं दरारों के बीच बैठकर
कलम को ज़ुबान....
और कागज को गवाह बनाकर
तुम्हारे इन यादों से मैं
रोज तर्क ताल्लुकात करता हूँ।
मेरे इर्द-गिर्द के लोग हैं बड़े बेवकूफ
इन्हें लगता है मैं कविता रचता हूँ।

शुभम मिश्र
पुत्र-पुष्पिता पंडा, सहायक महाप्रबंधक (वित्त)
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

आज का कश्मीर

सत्तर साल के कलंक को
आज भारत ने मिटाया है,
370 धारा हटाके,
ये इतिहास रचाया है।।
असंभव को संभव करके
ये बुनियाद बनाया है,
पूर्ण रूप से भारत का झंडा,
कश्मीर में लहराया है
370 धारा हटाके
ये इतिहास रचाया है।।
अलगाववादी नेताओं की,
स्वार्थपरक राजनीतियाँ
कुछ कानूनी पेचिदगियों से,
बढ़ी थी कश्मीर की दुर्गतियाँ।।
भारत का हिस्सा होके भी
भिन्न अंग कहलाता था,
अब भिन्न अंग से अभिन्न हो गया,
भारत का स्विटजरलैंड बनगया।
दो नहीं समान नागरिकता
का परचम लहराया है,
पूरे कश्मीर में बस यही
तिरंगा झंडा लहराया है,
३७० धारा हटाके
ये इतिहास रचाया है।।
शिक्षा से न कोई वंचित होगा
न रहेगा अब कोई अनपढ़,
अनिवार्य शिक्षा नीति
अब हो गई कश्मीर में शामिल।
370 धारा हटाके,
ये इतिहास रचाया है।।
एक विधान और संविधान
को सभी ने अपनाया है,
कार्यकाल हो गया पांच साल
यह कश्मीर में करवाया है,
३७० धारा हटाके,
ये इतिहास रचाया है।।
भारतवासी होंगे कश्मीर निवासी
यह संसर्ग अपनाया है,
असंभव को संभव करके
ये बुनियादी बनाया है,
३७० धारा हटाके,
ये इतिहास रचाया है।।
अब कश्मीर की घाटी में
सब नींद चैन की सोएंगे,
जो देश मिटाना चाहते थे,
वो आज बैठकर रोएंगे।।
सत्तर साल के कलंक को
आज भारत ने मिटाया है,
३७० धारा हटाके
ये इतिहास रचाया है।।

बि. सुजया लक्ष्मी
सीनियर टेक्नीशियन,
प्रद्रावक एकक, अनुगुळ

क्रिस्पी चिली बेबी कॉर्न

सामग्री- बेवी कॉर्न-२०० ग्राम, ब्रेड़ चूरा- ३ स्लाइस का, मैदा- एक कप, कॉर्नफ्लोर- २ चम्मच, नमक- स्वादानुसार, चिली फ्लेक्स- १ छोटी चम्मच, अदरक का पेस्ट- १ छोटी चम्मच, काली मिर्ची- १छोटी चम्मच(दरदरी कुटी हुई) बेबी कॉर्न तलने के लिए तेल।

विधि- क्रिस्पी चिली बेबी कॉर्न बनाने के लिए बेबी कॉर्न को धोकर सूखाकर रख लिजिए। फिर एक बर्तन में मैदा और कॉर्न फ्लोर डाल लीजिए। अब इसमें थोड़ा सा पानी डालकर गुठलियां खत्म होने तक घोल लीजिए, फिर बाद में इसमें थोड़ा सा पानी और डालकर अच्छी तरह से मिक्स कर लीजिए। इतना घोल बनाने में आधा कप पानी का यूज होगा। घोल में चिली फ्लेक्स, दरदरी कूटी काली मिर्च, अदरक का पेस्ट और नमक डालकर अच्छे से मिला लीजिए। अब घोल तैयार है।

अब बेबी कॉर्न तलने के लिए कढ़ाई में तेल गरम कर लीजिए। बेबी कॉर्न को लम्बाई में दो भाग में काट लीजिए। इस काटे हुए बेबी कॉर्न को मैदा के घोल में डालकर लपेट लीजिए। क्रम्ब्स को बेबी कॉर्न के ऊपर हाथ से दबाकर सेट करके प्लेट में रख लीजिए। सारे बेबी कॉर्न इसी तरह काट करके रख लीजिए। एक बेबी कॉर्न तेल में डालकर चेक कर लीजिए। तेल अच्छा गरम है तो बाकी के बेबी कॉर्न भी कढ़ाई के साइज के अनुसार डाल लीजिए। बेबी कॉर्न को पलट-पलट कर गोल्डन ब्राउन होने तक मध्यम तेज या मध्यम आंच पर तल लीजिए। जैसे ही बैबी कॉर्न अच्छे से तल जाए इन्हें कढ़ाई के किनारे पर ही थोड़ी देर रोक लीजिए ताकि अतिरिक्त तेल कढ़ाई में ही वापस चला जाए और इन्हें निकालकर प्लेट में रख लीजिए। अब सारे बेबी कॉर्न इसी प्रकार तलकर तैयार कर लीजिए। अब आपका क्रिस्पी चिली बैबी कॉर्न बनकर तैयार हैं आप चाहे तो इन्हें पहले से कोट करके रख सकते हैं और जब आपको सर्व करने हो तब फटाफट तलकर गर्म सर्व कर सकते हैं।

टिप्स- आप चाहे तो घोल सिर्फ मैदा भी बना सकती हैं, लेकिन कॉर्न फ्लोर मिलाने से इसमें क्रिस्पीनेस ज्यादा आती है। ब्रेड क्रम्ब्स बनाने के लिए ब्रेड को तोड़कर मिक्सर जार में डाल लीजिए और इसे पीस लीजिए। एक बात का खास ध्यान रखें घोल को एक साथ पानी डालकर ना बनाएं वरना गुठलियाँ खत्म करने में ज्यादा टाइम लग जाता है और बहुत बार घोल ज्यादा पतला भी हो जाता है।

संध्या गुप्ता
पत्नी – श्री अनुज कुमार, प्रबंधक,
मा.सं,निगम कार्यालय

हमारे एककों से हिंदी दिवस समारोह की झलकियां

निगम कार्यालय में हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर
पुरस्कार वितरण कार्यक्रम

निगम कार्यालय में द्विभाषी जन्मदिन शुभकामना
संदेश प्रदान करते हुए कार्यपालक निदेशक

निगम कार्यालय में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता

निगम कार्यालय में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित प्रतियोगिताएं

नालको NALCO
एक नवरत्न केंद्रीय लोक उद्यम
भारतीय सार
वैश्विक प्रसार
एल्युमिना परिशोधक
पवन ऊर्जा
एल्युमिनियम प्रद्रावक
सौर विद्युत
बॉक्साइट खान
ग्रहीत विद्युत संयंत्र
पत्तन सुविधाएँ
वेल्लित उत्पाद
एशिया में वृहत्तम एकीकृत एल्युमिना और एल्युमिनियम संकुलों में से एक, नालको के प्रचालन बॉक्साइट खनन, एल्युमिना परिशोधन, एल्युमिनियम प्रद्रावण, विद्युत सृजन से लेकर अनुप्रवाह उत्पादों तक की समग्र मूल्य शृंखला को पार कर के आगे बढ़ रहे हैं ।
▲ विश्व में एल्यूमिना का निम्नतम लागत का उत्पादक
▲ विश्व में बॉक्साइट का निम्नतम लागत का उत्पादक
▲ तीसरा उच्चतम शुद्ध विदेशी मुद्रा अर्जन करनेवाला केंद्रीय लोक उद्यम
नालको वेबसाईट
नालको ट्विटर
@NALCO_India
@CMDNalco
fb.com/nalcoindia
www.nalcoindia.com